आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 19 | उदयपुर मंगलवार 15 अक्टूबर 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कृष्णा की जीवनेच्छा और वह मैत्री स्नेह

-डॉ. पूरन सहगल-

'भाई साहब! मैं ठीक हुई अथवा नहीं हुई, उसकी चिंता नहीं है। आपने सहगलजी को हारने नहीं दिया। यह उपकार मैं सदैव स्मरण रखूँगी।' ऐसा कहकर वह रो पड़ी थी। धन का कर्ज तो जैसे-तैसे चुकाया भी जा सकता है किन्तु सौजन्यता का उपकार किसी भी तरह चुकाना सम्भव नहीं होता। वह तो एक सज्जन मित्र के द्वारा प्रदत्त अमूल्य पूंजी होती है। उसे तो सहेज कर रखा जाना ही ठीक है।

बात बहुत पुरानी है किन्तु इसमें निहित संदेश एकदम नया है। ऐसा लगता है मानो कल-परसों की ही बात है। प्रतिदिन किसी न किसी संदर्भ से वह अतीत याद आ जाता है। कृष्णा तो इसे स्नेह और आस्था से याद करती थी। आज वह नहीं है तब मुझे इस संदर्भ के साथ कृष्णा भी याद आ जाती है।

1984 ई. के जून महीने का समय। कृष्णा बहुत बीमार थी। उदयपुर के महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय में भर्ती करवाना पड़ा था। मेरी दशा भी बीमार जैसी हो चुकी थी। जिले के सभी डॉक्टर हार चुके थे। किसी ने बीमारी का पता तक नहीं लगा चल पाया था। जेब में कुछ नहीं था। तब लगता था घर भी टूटेगा। कृष्णा शायद ही ठीक हो सके।

बालकवि बैरागी दादा ने उदयपुर के डॉ. महेन्द्र भानावत को फोन किया। 'पूरन सहगल की पत्नी बहुत बीमार है। आप दवाखाने जाकर उसकी खैर-खबर लेते रहना। मुझे भी सूचित करते रहना।' तब तक डॉ. भानावत से मेरा सीधा परिचय नहीं था। उनकी एक दो पुस्तकें पढ़ी थी। उन पर छपा चित्र ध्यान में था।

डॉ. भानावतजी अगले दिन ही अस्पताल आए। उन्होंने वार्ड में मुझे ढूंढना शुरु किया। मैंने उन्हें देखकर पहचान लिया और उनके पास पहुँचा। मैंने प्रश्न किया, 'आप डॉ. भानावतजी हैं न?' उन्होंने भी संदर्भ के कारण पूछा, 'आप डॉ. पूरन सहगलजी हैं?' दोनों मिल गए।

भानावतजी कृष्णा के पलंग के पास आए। हाल-चाल पूछा और कहा, 'आप चिंता नहीं करें। अब आप ठीक जगह आ गई हैं। जल्दी ठीक हो जाएँगी।' भानावतजी के ये शब्द कृष्णा को संजीवनी बूटी की तरह लगे। उसके मुख पर मैंने बहुत दिनों बाद मुस्कराहट देखी। भानावतजी थर्मस में चाय लाए थे। बिस्कुट भी। उन्होंने कृष्णा को चाय का कप दिया। बिस्कुट दिए। उसने बड़े चाव से चाय भी पी और बिस्कुट भी खाए। मुझे लगा कृष्णा तो ठीक हो गई है। स्नेह से बड़ी कोई औषधी नहीं होती और अपनेपन के आश्वासन से बड़ा कोई मल्हम नहीं होता। यह बात मुझे उस दिन समझ में आई।

भानावतजी मुझे लेकर बाहर तक गए। मुझे साहस दिला कर बोले, 'बैरागीजी का फोन आया था। आप कितने भाग्यशाली हैं कि बैरागीजी जैसा बड़ा साहित्यकार आपकी इतनी चिंता करता है। आप हिम्मत रखिए मुझे अपना भाई जानिए और जैसी भी जरूरत हो निसंकोच मुझे बताइएगा। आपकी पत्नी बीमारी से हारी हुई हैं। उनका आत्मबल बनाए रखना होगा। बाकी तो डॉक्टर सब ठीक ही करेंगे।'

मैं अस्पताल के बाहर तक उनके साथ गया। वापिस कृष्णा के पास आया तब देखा वह पलंग से उठकर आसपास के मरीजों से बातचीत कर रही थी। मुझे लगा यह तो ठीक हो गई है। कल छुट्टी ले सकेंगे। डॉक्टर से दवाइयाँ लिखवाकर घर चले जाएँगे।

लेकिन ऐसा हो नहीं सका। ठीक पाँच बजे प्रात: उसके पेट में दर्द शुरु हो जाता था जो शाम पाँच बजे तक बना ही रहता था। डॉक्टरों ने सब प्रकार की जाँचे करवा ली थीं किन्तु कोई बीमारी समझ में नहीं आ रही थी। अनुमान से इलाज चल रहा था। भानावतजी प्रतिदिन हाल-चाल पूछने आ जाते थे।

कभी चाय, कभी दलिया, खिचड़ी, कभी फल वे सदा लेकर आए। उनका स्नेह और अपनापन कृष्णा और मेरा दोनों के लिए अमृत प्रसाद की तरह था। दस दिन तक कृष्णा अस्पताल में भर्ती रही। भानावतजी एक दिन भी नहीं चूके। ऐसा छोटे कद का बड़ा आदमी मैंने बैरागीजी के अलावा और नहीं जाना।

इसी बीच मेरे कई मित्र उदयपुर आए। आश्वस्त भी किया। और जाते समय हठपूर्वक मेरे जेब में कुछ रूपये भी डाल गए। उनका अहैतुक स्नेह मैं सदा याद रखता हूँ। ऐसे समय ही लगता है अच्छे मित्र सदा बनाना चाहिए।

ऐसे ही संदर्भ में तुलसीदासजी ने कहा होगा, 'धीरज, धर्म, मित्र और नारी, आपाद्काल परखिए चारी।' मेरे पास उस समय धीरज भी था, धर्म भी था, मित्र भी थे और सुलक्षणी नारी भी थी। भले ही वह बीमार थी किन्तु उसे स्वयं से अधिक मेरी चिंता बनी रहती थी।

भर्ती होने के आठवें दिन मनासा से एक धनाढ्य सज्जन भी उदयपुर आए। वे बैरागीजी के मित्र थे। उन्हें भी बैरागीजी ने कहा, 'उदयपुर में पूरन की पत्नी भर्ती है। पूरन वहाँ अकेला है। समय निकालकर उससे मिलना और संभव हो और उसे आवश्यक हो तो उसकी मदद भी करना।'

वे सज्जन जब अस्पताल आए उस दिन कृष्णा की तबियत बहुत अधिक खराब थी। मुझे लग रहा था आज बिदा हो जाना चाहती है। उन सज्जन ने जब कृष्णा की वैसी हालत देखी तो कहा, 'तुम किसी दूसरे अस्पताल में इसे भर्ती करवा दो। मैंने उनकी ओर निरीह दृष्टि डाली। वे मौन ही रहे। उन्होंने अपनी जेब से 100-100 के पाँच नोट निकाल कर मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा, 'ये रूपये रख लो। मेरी ओर से सहायता समझना। उनकी आँखों में जो दाता का अहंकार था वह मुझे भीतर तक साल गया। मुझे लगा ये नोट लौटा दूँ। मना कर दूँ लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। वे चले गए। यह कहकर कि मैं फिर आऊँगा। वे नहीं आ पाए। मैंने उनकी प्रतीक्षा भी नहीं की। पाँचों नोट मैंने सम्भाल कर अलग से अपने बेग में रख लिए।

शाम को भानावतजी आए। कृष्णा सदा की तरह कुछ ठीक थी। बहुधा शाम को वह दर्द से मुक्त हो जाती थी। भानावतजी ने कहा, 'आप चाहो तो इन्हें मेरे घर पर लेते आना। वहीं दवा देते रहेंगे। ठीक होने पर घर लेते जाना।' कृष्णा सुन रही थी। उसने कहा, 'भाई साहब आपके घर मैं आऊँगी अवश्य किन्तु ठीक होकर। आप का अपनापन मैं जीवन भर नहीं भूलूँगी। आपने मुझ में जीवित रहने का हौंसला जगा दिया है। मैं अब बीमारी को हरा कर मानूँगी।

भानावतजी बोले कुछ नहीं केवल मुस्करा दिए। फिर उसके पलंग के पास रखी स्टूल पर बैठकर बोले, 'आप अब ठीक हैं। दवाइयाँ लिखवा लेते हैं। कल आपको रिलीव करवा कर यहाँ से ले जाएँगें। कुछ तो दवाखाने का वातावरण भी बीमार करने लगता है।' भानावतजी ने एक ठहाका लगाया। कृष्णा भी हँसी। मैं तो न हँस सका न रो सका। सोच रहा था, 'काश! डॉक्टर भी मरीज से इतना अच्छा व्यवहार करने के आदी होते।'

खैर हमने सच में अगले दिन रिलीव होने का तय कर लिया। डॉक्टर से कह दिया। अगले दिन भानावतजी सवेरे अस्पताल पहुँच गए। उस दिन आश्चर्य रूप से कृष्णा ठीक थी। शायद उसे अपने दोनों छोटे बच्चों से मिलने की सुखानुभूति स्वस्थ रख पा रही थी। बच्चे बहुत छोटे थे।

हम रिलीव हो गए। भानावतजी ने टेम्पो मंगवा दिया। टेम्पो पर बैठने से पहले कृष्णा ने अपने हाथ जोड़कर भानावतजी से कहा, 'भाई साहब! मैं ठीक हुई अथवा नहीं हुई उसकी चिंता नहीं है। आपने सहगलजी को हारने नहीं दिया यह उपकार मैं सदैव स्मरण रखूँगी।' ऐसा कहकर वह रो पड़ी थी।

हम उदयपुर से मनासा आ गए। मैंने अगले ही दिन सौ-सौ के वे पाँचों नोट उन सज्जन के घर जाकर लौटा दिए। उन्होंने ले भी लिए। मैं सोचता हूँ धन का कर्ज तो जैसे-तैसे चुकाया भी जा सकता है किन्तु सौजन्यता का उपकार किसी भी तरह चुकाना सम्भव नहीं होता। वह तो एक सज्जन मित्र के द्वारा प्रदत्त अमूल्य पूंजी होती है। उसे तो सहेज कर रखा जाना ही ठीक है।

भानावतजी का वह स्नेह आज भी मेरे प्रति यथावत है। मैं जब भी उदयपुर जाता हूँ तब उसी अस्पताल के सामने से ही गुजरना होता है। याद आ जाता है भानावतजी का वह अहैतुक अपनापन! तभी याद आ जाती है कृष्णा की जीवित रहने की जिजीविषा!

खोज-खबर

सवा बारह रूपये में पाप मुक्ति का पट्टा

प्रतापगढ़ जिले के अरणोद गांव का गौतमेश्वरजी तीर्थ सतयुग की घटना का साक्षी है। वहां अध्यापन कार्य कर रहे मदनलालजी कटारिया के विशेष आग्रह के कारण जाना हुआ।

19 सितंबर 1992 को रात्रि विश्राम के दौरान उन्होंने बताया- प्रसिद्धि है कि मातृकुंडिया में परशुराम ने अपने पिता के कहने से माता का सिर काटने पर चढ़ा पाप धोया तो गौतम ऋषि पर नासिक में गाय की हत्या करने पर जो पाप चढ़ा उसे गौतमेश्वर आकर धोया।

कपड़ों पर चढ़ा मेल उन्हें धोने से उतार दिया जाता है पर जीव हत्या का पाप हर कहीं नहीं धुलता। यह पाप गौतम ऋषि पर ऐसा चढ़ा कि उनका पूरा शरीर काला पड़ गया। उनके सिर पर गाय का चाम (चमड़ा) घूमने लग गया। वे गाम-गाम डोलते फिरे। अंत में गौतमेश्वर आकर एक ग्वाले के वहां रात्रि विश्राम किया।

अर्धरात्रि को अचानक गौतम ऋषि की नींद खुली। उन्होंने वहां बंधी गाय और उसके बछड़े का आपसी संवाद सुना तो वे दंग रह गये। संवाद इस प्रकार था-

गाय - बेटा, जितना दूध पीना चाहे, अभी पी ले। कल एक ब्राह्मण आयेगा सो तुझे ठोकते-पीटते लेकर जायेगा।

बछड़ा- वो मुझे पीटेगा तो मैं उसकी हत्या कर दूंगा।

गाय - ना पुत्र ना, ऐसा मत करना। इससे तेरे सिर हत्या का पाप चढ़ जायेगा तब मैं भी तुझ से अलग रहूंगी। पास नहीं आ सकूंगी।

बछड़ा- मां, मैं पूर्व में ऋषि पुत्र था। मैं वह स्थान जानता हूं जहां ब्रह्महत्या का पाप धुलता है।

गाय - बेटा, पुत्री और बछड़ा तो पराये घर ही अच्छा लगता है किंतु यदि तू आत्मशुद्धि कर आयेगा तो मैं तेरा सम्मान करूंगी।

सुबह हुई। ब्राह्मण आया। बछड़े के गले में रस्सी बांध उसे खींचा पर वह जरा भी टस से मस नहीं हुआ। इस पर ब्राह्मण को गुस्सा आ गया। उसने उसकी पीठ पर जोर से रस्सी दे मारी जिससे निशान जम गया। बछड़े ने बदले में ऐसा सींग मारा कि ब्राह्मण दूर धूल खाता जा पड़ा। तत्काल उसकी मृत्यु हो गई।

बछड़े पर ब्रह्महत्या का पाप चढ़ गया तब उसने अपनी बुद्धि से कुंड के भीतर जाकर उसके उथले पानी में लोटपोट लगाई। पूरा शरीर पानी के भीतर किंतु उसका नाक, मुंह और पांव के बाहर रहने से उसका पाप नहीं धुल पाया। शेष शरीर श्वेत हो गया और बाकी का हिस्सा काला रह गया। गौतम ऋषि ने यह सारी रचना देखी। बछड़ा ज्योंही कुंड से निकल अपनी मां के पास पहुंचा कि ऋषि ने उस कुंड में नहाकर अपना पाप दूर किया। यह कुंड मंदाकिनी नाम से प्रसिद्ध है। ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने वहीं तपस्या प्रारंभ कर दी। शंकर ने उनकी मनोकामना पूरी की।

अब कुंड में नहाने का टेक्स लगता है। प्रारंभ में केवल पावली टेक्स था। तब सौलह आने का रूपया था। उसके चौथे भाग चार आने की पावली और आठ आने की अधेली कहलाती थी। उसके बाद यह टेक्स बढ़कर सवा ग्यारह रूपया हो गया। एक रूपया झडूले उतारने का सो कुल मिलाकर सवा बारह रूपया वसूला जाता है तब ही एक सर्टिफिकेट दिया जाता है जिस पर वहां के अमीन, महंत और पुजारी के हस्ताक्षर किये होते हैं। प्रमाणपत्र में लिखा होता है- फलाणाजी (नाम) ने यहां आकर मंदाकिनी में गंगा स्नान किया जिससे प्रायश्चित का निवारण हुआ।

कहा जाता है कि मंदाकिनी कुंड एक ऋषि के पसीने की देन है। आज भी पसीने की बू आती है और नहानेवाले के पहने आभूषण काले पड़ जाते हैं। पूरा परिसर खोखली चट्टानों से अटा पड़ा है। ऊपर पहाड़ और उसके नीचे गुफा, बंट खाती चट्टानें। नीचे गौतमेश्वर मंदिर। मंदिर में शिवलिंग स्वत: प्रकट हुआ। मोहम्मद गौरी द्वारा मूर्ति पर वार करने से शिवलिंग पर दरार (तड़) पड़ गई। उसमें से काला भ्रमर निकला। उसकी गुंजार से असंख्य भ्रमर निकले जो गौरी की सेना पर टूट पड़े। अनेक सैनिक जहर डंकी हो गये। कई मृत्यु को प्राप्त हुए। ऐसा चमत्कार देख गौरी ने यहां एक मंदिर बनाया। हमने यहां रह रहे पुण्यगिरी, गौतमगिरी तथा रमेशगिरी नामक साधुओं से भेंटकर बहुत सारी अजूबी जानकारी प्राप्त की।

कई समाजों द्वारा जीवहत्या का पाप चढ़े व्यक्ति को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। ऐसी स्थिति में यहां आकर ऐसे व्यक्ति नहाकर अपना प्रायश्चित करते हैं। पाप दूर करते हैं। यहां का परचा (प्रमाणपत्र) पाकर वे लोग पुन: समाज से जुड़ पाते हैं। पहाड़ की चट्टानों से भ्रमर दलों के थाजे (निवास) के लिए कहा जाता है कि भ्रमर रूप में सभी देवों का यहां निवास रहता है जो हर आने वाले के सहयोग संबल बनते हैं। यहां सबकी मुराद पूरी होती है।

शेर से कुश्ती, चीते की सवारी

आदमी की सामर्थ्य को कैसे पहचानें, किससे तुलना करें। किस तरह उसे समझे और परिभाषित करें। सच तो यह है कि कई लोग छिपे रूस्तम होते हैं और ऐसे भी कि वे क्षणिक अपनी चमक बता भी दें तो जुगनू की तरह ही उसे सबकी निगाहों से ओझल कर दिया जाता है। शेर नाम सुनते ही अच्छे-अच्छों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं फिर उसे प्रत्यक्ष देखना और कइयों के बीच उससे कुश्ती करने वाला व्यक्ति कितना बलधारी हो सकता है, इसका अंदाजा मुश्किल से ही लगाया जा सकता है।

ऐसे ही एक नारबा थे जिन्हें बड़े 'नारजी' और छोटे 'नारबा' कहते थे। वे सदैव अपने पास 6 कटारें रखते। एक-एक दोनों हाथों में, एक-एक दोनों पांवों के नीचे और एक-एक कमर के दोनों ओर। कटारें अपने पास रख वे कहीं भी चले जाते।

एकबार महाराणा फतहसिंहजी ने उनकी बहादुरी के बारे में सुना कि नारजी किसी भी हिंसक जानवर की शिकार करने में तो बड़े पहुंचे हुए शिकारी हैं ही पर जंगली हिंसक जानवरों से कुश्ती लड़ना भी कोई उनसे सीखे। अपने नामानुरूप नार यानी शेर से कुश्ती करने में भी उन्हें कोई हिचक नहीं होती। महाराणा ने सहज भाव से कहा, कोई दिखाये तो पता चले कि मेवाड़ में शेर योद्धा ही नहीं, शेर से लड़ने वाला योद्धा भी है।

यह सुन नारजी को बुला एक पिंजरे में शेर को डालकर कुश्ती-दंगल का आयोजन किया गया। नारजी बड़े खुश थे कि आज मेवाड़नाथ मुझ अदने से नार की कुश्ती देखेंगे। नारजी को महाराणा का आदेश पाते ही पिंजरे में दाखिला दे दिया गया। उन्होंने नार से कुश्ती कर जो शौर्य दिखाया उससे महाराणा बड़े खुश हुए और उसका सम्मान किया।

नारजी के पोते रामसिंह झाला ने मुझे बताया कि नारजी की तरह उनका खेतीवाला हीजारी नाथू गमेती भी बड़ा बहादुर, निर्भीक और निडर था। एकबार एक चीता रात को खेत में घुस आया। नाथूबा ने एक आवाज सुनी तो उन्हें लगा कि एक गाडरे को किसी ने दबोच लिया दिखता है। नाथूबा आग ताप रहे थे। सर्दी के दिन थे। एक जानवर उनके सामने आया। उन्होंने उसे एक बड़ा सा जंगली कुत्ता समझ लिया और उसके कान पकड़कर पीठ पर बैठ गये। दोनों कानों को उन्होंने इस बुरी कदर जोश से दबाये रखा कि वह टस से मस नहीं हो सका। फिर जब वह बेसहारा हो गया तो उन्होंने उसे छोड़ दिया। कहा- जा, भाग जा, अब आया तो खैर नहीं।

यह कहते ही वह तेजी से भागा। नाथूबा ने उसे देखा तो वह कुत्ता नहीं चीता था। उसे भागते देख वे भी भौचक्के रह गये और उनकी रूह क्षणभर के लिए कांप गई। रामसिंह ने बताया कि सन् 1960 में 80 वर्ष की उम्र में नाथूबा का शरीरांत हुआ। यह वाकया जब नाथूबा ने अपने मालिक नारबा को कह सुनाया तो तत्काल नारबा कुल्हाड़ी लेकर निकले। उन्होंने चीते को थोड़ी दूर जंगल में हांफते-कांपते देखा। वे उसके पास पहुंचे और कुल्हाड़ी के एक ही वार से उसका काम तमाम कर दिया। रामसिंह ने बताया कि नारजी राणा गांव के वासींदे थे जहां महाराणा प्रताप ने उमरे खाये। वनबिलाव द्वारा उनके पुत्र के हाथ से रोटी छीन ले जाने की घटना भी उसी दौरान घटित हुई।

छापाखाने से संबंधित मशीनों के दक्ष कारीगर के रूप में रामसिंह से मेरा परिचय उदयपुर में हुआ जब मैं मंगल मुद्रण नाम से छापाखाना चलाता था। रामसिंह ने बताया कि गोगुंदा के आसपास का क्षेत्र बड़ा ही ऐतिहासिक है। राणा उमरा गांव भी इसीलिए प्रसिद्धि लिए है कि जहां उमरा खाये वहां गांव बसा जिसका नाम भी उमरा खाने की याद को बनाये रखना था।

रामसिंह ने गोगुंदा के घोड़ों की प्रसिद्धि का बखान करते बताया कि उनका मुकाबला अन्य घोड़ों से संभव नहीं था। कोटा ठिकाने की गणगौर का अपहरणकर्ता लालसिंह भी गोगुंदे के घोड़े पर ही सवार होकर गया था। यहां के ऐसे होनहार घोड़े थे कि उन पर बैठकर एक दिन में सौ कोस तक की यात्रा की जाती थी। एक अंग्रेज ने गोगुंदा के घोड़े के साथ अपनी मोटरसाइकिल का उदयपुर की फतहसागर पाल पर मुकाबला किया तो घोड़े ने ऐसी चौकड़ी भरी कि मोटरसाइकिल लांघकर आगे निकल गया। रामसिंह ने बताया कि घोड़ों को बादाम का हलुआ और जलेबी खिलाते तो उन्होंने भी देखा है।

नहाण कलाकार ब्रजमोहन

कोटा का नहाण बहुत प्रसिद्ध है। वहां के नहाण कलाकार ब्रजमोहन (अरविन्द माली) से 23 फरवरी 1988 को खेल के दौरान भेंट हुई। अरविन्द इस नहाण में महिला कलाकार बनता है। कोई चौदह वर्ष तक लड़की का रोल किया। एकबार एक छोटी सी रामलीला देखी तब उसने भी छत से रस्सा बांधकर हनुमानजी की उड़ान भरी। अपना उत्सव दिल्ली में भी भाग लिया।

अरविन्द गाल में त्रिशूल डाल आरपार निकाल देता है। शुरू-शुरू में वह अपना गाल फाड़ तो देता पर त्रिशूल निकालता कोई दूसरा। फिर अभ्यास से सीख गया। इसे भगवती मातेश्वरी की कृपा मानता है। पुरखे कहते थे कि ढींढ़वा का एक फकीर सांप निगलता था। उसे वह पूंछ की तरफ से पेट में डालता। मुंह में पकड़े रहता और फिर खींचकर पेट से बाहर निकालता। उस फकीर को नोल्या फकीर कहते थे।

एकबार ब्रजमोहन नदी में नहा रहा था। लोगों ने अफवाह फैला दी कि वह सांप निगल गया। इस पर ब्रजमोहन संभला और अपनी इज्जत बचाना चाहता था सो मातेश्वरी का स्मरण कर एक कालबेलिये से सांप मंगवाकर निगल गया। फिर तो कई जगह प्रदर्शन में सांप निगलने में उसने वाहवाही ली।

ब्रजमोहन काश्तकार है। 15-20 बीघा जमीन है। वह हनुमानजी की उड़ान भी भरता है। अभी 38 वर्ष का है। उसके गुरु अलगोजा बजाते हैं। छोटाभाई आनन्दीलाल ढोलक बजाता है। नाचता भी है।

ब्रजमोहन ने अपने सीने पर पत्थर तुड़वाने का काम भी सीखा। तीन-तीन मन के पत्थर तुड़वाता है। हर समय उसे नया कुछ करने की सोच रहती है। दोनों हाथों, पांवों तथा मुंह में जलती मशाल ले नाचता है।

सांगोद में एकबार दो बांस बांधकर दो आदमी को पकड़ाये। उनमें आग लगादी। उसने रेस मारी। रस्सी ढीली हुई। डाई लगाई। नहीं निकल पाया तो रस्सी पकड़ 30 फीट ऊंचे से कूद गया। इससे उसके होठ कट गये। नौ टांके आये। बाल वगैरह जल गये लेकिन काम नहीं छोड़ा। कहता है जब भी काम करता हूं, कपड़े खून से लथपथ हो जाते हैं। उसके पिता शंकरलाल नगारे बजाते हैं।

उसने बताया कि कामिया सिन्दूर लगाने से खून रूक जाता है। इस सिन्दूर को लखारीकामी कहते हैं। वह कांच पर सीना लगाकर भी नाचता है। खेत-खलिहान पर चुपके-चुपके प्रेक्टिस करता रहता है। कंडे की आग को सिर पर रखकर खड़ा रहता है। चीमटे पर आग रखता है पर बाल नहीं जलता है। बोला, ऐसी कला कोई भी हो जोखिम भरी होती है और बाजवक्त बहुत कुछ सहना बर्दाश्त करना और खोना भी पड़ता है।

- म. भा.

कहावतों के कहकहे (11)

(106) कालो आखर भैंस बराबर

(107) कांसी कुती कुभारजा कर लागां कूकंता सोनो, शीशो ने सुघड़ नर मधरा ही बोलंत

(108) कीड़ी नै कण नै हाथी नै मण रामजी दै

(109) की घणी कू घीणियां, की घणा कपूत, भैंसड़ली एकौ भली तौ एकौ भलौ सपूत

(110) कीड़ी री मौत आवै जदी पंख निकलै

स्मृतियों के शिखर (86) : डॉ. महेन्द्र भानावत

उदयपुर में गांधीजी द्वारा विवाहित भतीजी उमिया बेन से यादगार भेंट

उदयपुर अपने प्रारंभिक काल से ही सबसे सुंदर सुरक्षित और सदाबहार रहा। तब की इसकी प्राकृतिक मनोरम छटा का दरसाव देते मैंने लिखा था- मोटे-मोटे मगरे। मगरे से मिले छोटे-छोटे मगरे। मगरे के ऊपर मथारे। मथारों पर ऊंची-ऊंची घाटियां। टेढेमेढे रास्ते और घुप्प-घुप्प गलियां। फिर खादरे खूब बड़े। खूब घने। गहरी छाया और घनी झाड़ी वाले। खादरों में लगे फिर मथारे। मगरे की आजू बाजू की फरड़ और इधर-उधर के ऊंचे-ऊंचे स्थान जिनके कई नाम।

वही उदयपुर आज भी सबकी आंखों का तारा, विश्व का सितारा बना हुआ, झीलों की हथेली पर चांद सा सोया शान्त सम्मोहक शहर है जिस पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तक फिदा हुए और उन्होंने अपनी भतीजी उमिया को यहां के लाड़ले कुंवर के साथ परिणय सूत्र में बांध दी।

वह दिन 4 दिसंबर 1929 का था जब उदयपुर के शंकरलाल अग्रवाल 'बनो तो म्हारो रामचन्द्र अवतार' बनकर अहमदाबाद के लाल बंगले में 'बनी तो म्हारी सीता जानकी' बनी गांधीजी की भतीजी का हाथ थामने पहुंचे। गांधीजी द्वारा रचाया गया यह पहला अन्तर्जातीय ही नहीं, अन्तर्प्रांतीय विवाह भी था।

हुआ यह कि जमनालाल बजाज जब बिजोलिया आये तब उनका संपर्क शंकरलाल से हुआ जो स्काउट ओर्गेनाइजर थे। बजाज उनके सद्व्यवहार, सेवाभाव तथा स्फूर्तिदायक चालचलन से बड़े प्रभावित हुए। वहां से लौटते समय उन्हें गांधीजी के पास आश्रम ले गये। गांधीजी उनकी देशसेवा की बलवती भावना ने बड़े प्रसन्न हुए फलस्वरूप बजाज के परामर्श पर उन्होंने उमिया के पिता जयसुखलालजी से सलाह कर शंकरलाल के साथ सगपण तय कर लिया।

अहमदाबाद में डॉ. जीवराज मेहता का लाल बंगला गांधीवादी विचारकों तथा मनीषियों के आवागमन का मुख्य स्थल था। यहीं विवाह की विधि प्रख्यात संगीतज्ञ विष्णु दिगंबर के सुशिष्य पं. खारे द्वारा सम्पन्न हुई।

उदयपुर में अमल का कांटा परिक्षेत्र में निवास कर रहे मैंने उमिया बेन तथा शंकरलालजी दोनों से भेंट की। उन्होंने बताया कि इस विवाहोत्सव में सरदार वल्लभभाई पटेल, ठक्कर बापा, जमनालाल बजाज, अंबालाल साराभाई, डॉ. अंसारी, डॉ. जीवराज, सादिक अली तथा उदयपुर से डॉ. मोहनसिंह मेहता, डॉ. कालूलाल श्रीमाली एवं देवीलाल सामर ने भाग लिया।

उदयपुर में डॉ. मोहनसिंह मेहता द्वारा संचालित स्काउट आश्रम की विविध गतिविधियों से अवगत कराते हुए देवीलाल सामर ने मुझे बताया कि तब स्काउट आश्रम द्वारा समाजसुधारपरक नियमित रूप से जो नाटक प्रदर्शित किए जाते थे उनमें वे स्वयं और शंकरलालजी मुख्य भूमिका लिए होते थे।

सरल और सहज हृदयमना उमिया बेन से मेरी यह भेंट 20 अगस्त 1985 को उनके ऊपरी मंजिल स्थित निवास पर हुई। मैं दोनों से पहली बार ही मिला। मण्डी की नाल से आती जो सड़क झीणीरेत चौक से सब्जी मार्केट जाती सड़क को क्रोस कर अमल का कांटा है वहीं किनारे पर एक ओर डॉ. बख्तावरलालजी की क्लीनिक थी। ठीक उसके सामने के मकान में उमिया बेन से बड़ी देर तक भेंट कर बहुत सारी रोचक और अद्भुत जानकारी प्राप्त कर मैं अपने को बड़ा गौरवान्वित महसूस कर रहा था कि गांधीजी ने उदयपुर को सदा के लिए अपने परिवार से स्थायी रूप से जोड़कर जो रिश्ता कायम किया वह पूरे विश्व के लिए ऐतिहासिक घटना है और पहलीबार मेरे माध्यम से वह सारी जानकारी उजागर होगी।

साप्ताहिक नवजीवन में कनक 'मधुकर' ने उमिया बेन के निधन पर 10 मार्च 1987 के अंक में मेरा आलेख छापा। देश के अनेक दैनिक पत्रों के अलावा जिन पत्रों में मैं स्तम्भ लिखता था उनमें भी खूब छपा। बम्बई से प्रकाशित जनसत्ता में अपने मेवाड़ी की चिट्ठी स्तम्भ में 04 फरवरी 1990 में 'उदैपुर रै दूल्हा नैं गांधीजी आपरी भतीजी परणाई' शीर्षक से मेवाड़ी में छपे अपने आलेख पर अनेक पाठकों की प्रशंसात्मक टिप्पणी से मैं भाव विभोर हो गया।

उमिया बेन ने बताया कि विवाह में गांधीजी ने अपने हाथ से काते गये सूत से हम दोनों के लिए पोशाक और पतली चादर बनवाई। साबरमती आश्रम को खूब अच्छी तरह सजाया गया। दूर-दूर तक के सैकड़ों लोग इकट्ठे हुए। उस दिन आश्रम में गुड़ की लपसी बनाई गई। गणेश स्थापना, कांकण दोवड़ा से लेकर कोड़ा-कोड़ी के खेल तक में गांधीजी ने विशेष रूचि ली। उमिया बेन को उन्होंने गीता की पुस्तक और तकली भी भेंट की। पुस्तक में उन्होंने लिखा- ''चि. उमिया, अखंड सौभागी रहो। यह गीता ही लाखों रूपये का जेवर है। मेरा आशीर्वाद।''

साबरमती आश्रम में गांधीजी ने अनेक ऐसे कार्य किये जिनके कारण इतिहास-संस्कृति और देश की स्वाधीन चेतना के अनेक पृष्ठ शिलालेखीय उत्सवधर्मिता के समृद्ध खजाने दे सकते हैं। यहां भारतीय संस्कृति और संस्कारजनित अनेक सेतुओं का निर्माण हुआ। कर्त्तव्य धर्म की कई ध्वजाएं चढ़ीं। जनक्रान्ति के अनेक बीजों को वपन हुआ। अंग्रेजों द्वारा किये गये खून खराबे और नरसंहार के रहते-सहते गांधीजी ने अपनी अहिंसक नाव-नीति से देश को रक्त की एक बूंद तक का स्पर्श नहीं कराते अंग्रेजों को भगाते भागते किया।

उमिया बेन का विवाह साबरमती आश्रम का प्रथम विवाह था जिसे बड़े उल्लास और हरख से मनाया गया। इस समय उमिया बेन की उम्र सत्रह वर्ष की थी।

उमिया बेन ने बताया कि इससे पूर्व उनकी सगाई बम्बई में कर दी गई थी। दूल्हे पक्ष की ओर से उन्हें सत्रह हजार का जेवर भी चढ़ाया गया था किन्तु उमिया बेन के पिता बिना किसी तड़कभड़क, दिखावे तथा लेने-देन वाला विवाह चाहते थे परन्तु दूल्हे के माता-पिता इस पक्ष में नहीं थे सो यह सम्बन्ध विच्छेद करना पड़ा। उमिया बेन इस सम्बन्ध को छोड़ने के पक्ष में नहीं थी पर विरोध करने की हिम्मत भी नहीं जुटा सकी।

जमनालालजी बजाज के माध्यम से गांधीजी जब शंकरलालजी के सम्पर्क में आये तो उन्हें वे जच गये। एक तो शंकरलालजी स्काउट में आर्गेनाइजर थे सो उनमें कूट-कूट कर सेवाभाव के गुण थे। फिर प्रकृति से वे शान्त और सीधे थे। बड़बोले नहीं होकर विनीत थे और बजाज की पसंद भी लिये थे किन्तु अन्य रिश्तेदारों को यह सम्बन्ध नहीं जचा। इसका एक बड़ा कारण तो गुजरात से मेवाड़ की दूरी होना ही था और फिर उदयपुर तब एक तरफ बसा एकान्त स्थल था किन्तु गांधीजी जिस बात को धार लेते उसे छोड़ते नहीं थे। जमनालालजी बोले- मेवाड़ में श्रीनाथ बाबा की बड़ी धाम है और गुजरात में उनकी बड़ी मान्यता है सो वह सदा सबकी रक्षा करेगा।

उमिया बेन स्पष्ट, सच और खरी बोलने वाली थी। बोली कि उनकी माता भी इस विवाह के पक्ष में नहीं थी। कहती थी कि मेरी उमिया को मैंने सदैव ही बड़ी धरती और बड़ा आकाश दिया। मखमल के गदैलों पर इसे बड़े यत्नों से पालीपोषी। खुली धरती पर पांव नहीं रखने दिया। इसने कभी गरीबी नहीं देखी। फूल जैसी कोमलांगी की तरह रखा। अब मेवाड़ में इतनी दूर जा रही है तो कौन इसकी सुध लेगा। वह तो मीरांबाई और प्रताप की धरती है जिन्होंने बड़ी कठोरता से जीवन निर्वाह कर अपना जीवन बड़े कष्टों तथा संघर्षों में व्यतीत किया।

उमिया बेन की माता कट्टर वैष्णव थी। साबरमती आश्रम में जो रसोड़ा चलता था, उसमें वह भोजन नहीं करती थी। गांधीजी ने उमिया को बड़ी हिम्मत बंधाई। वे उसे बड़ा स्नेह और लाड़प्यार देते थे। उन्होंने कहा कि वे सदा ही उसके साथ रहेंगे। उनके रोम-रोम में उमिया बसी रहेगी जैसी अन्तरआत्मा बसी रहती है। इसीलिए चंवरी में उन्होंने भी उमिया के साथ सात फेरे लिये और यह बताया कि सचमुच में वे उसी के साथ हैं।

विवाह पर उमिया बेन को गांधीजी ने अपने हाथों से बनाई जो पतली खद्दर की चद्दर दी वह मुझे दिखाई और कहा कि अब यही मेरे पास उनकी दी हुई अनमोल भेंट बची है जिसे मैंने बड़े यत्नों से संभाली हुई है।

विवाह पर गांधीजी ने उमिया बेन से दो वचन लिये। एक तो यह कि वो जब भी काठियावाड़ जायेगी, साबरमती आश्रम अवश्य आयेगी और दूसरा यह कि उसके घर में जो भी कोई बात हो, वह उन्हें अवश्य लिखेगी। उमिया बेन से दोनों में से पहली बात का निर्वाह नहीं हो पाया।

विवाह करने के पश्चात गांधीजी से उसका मिलना ही नहीं हो पाया हालांकि उनके पत्र अवश्य उनको प्राप्त होते रहे। बोलीं, जब गांधीजी किसी बड़े लाट साहब को चिट्ठी लिख रहे होते तब कोई उन्हें मुझे चिट्ठी लिखने की याद दिला देता तो वे अवश्य मेरा स्मरण करते।

उमिया बेन भी उन्हें पत्र लिखती रहती पर कभी घर-गिरस्थी की बात नहीं लिखी जबकि गांधीजी हर चिट्ठी में घरेलू बातें ही अधिक लिखते। राजनीति का तो एक आखर भी नहीं लिखते। हां, जब-जब भी मनु बेन उदयपुर उनसे मिलने आती तो गांधीजी के समाचार अवश्य लाती।

इस विवाह में गांधीजी ने उमिया बेन को कोई जेवर भेंट नहीं किया किन्तु गीता की पुस्तक देते जोर देकर यह अवश्य कहा कि यह गीता ही लाखों रूपयों का जेवर है। उमिया बेन ने उस दिन मुझे वे सब बातें साफ-साफ कहीं जो मैंने पूछीं।

उसी दौरान मेरे मन में आया कि गांधीजी के बारे में तो बहुत सारी बातें हो गईं किन्तु इस विवाह में कस्तूरबा की कैसी भूमिका रही। उनका उमिया बेन के प्रति क्या रूख रहा यह जानने की उत्सुकता तीव्र थी सो लगे हाथ बहुत सारी बातें पूछ बैठा।

उमिया बेन ने बताया कि कस्तूरबा उम्र में गांधीजी से छह माह छोटी थीं। उनका हर काम बड़ा अनुशासित था। समयबद्ध वह निरन्तर श्रमशील रहती थीं। सफाई पसंद थी। प्रतिदिन नियमित पूजापाठ तथा धर्मध्यान करतीं। मन्दिर जातीं।

स्वयं के लिए भोजन स्वयं बनातीं। गांधीजी का बड़ा ध्यान रखतीं। रात्रि को सोते वक्त उनके सिर पर आंवले तथा पांवों में बादाम का तेल मसलती। इसी कारण उनके पांवों की एड़ियां फूल-सी कोमल और गुलाबी रंग लिये होती। कस्तूरबा श्रीनाथजी की बड़ी भक्त थी। नेहरूजी उन्हें काकीबा कहकर सम्बोधित करते।

गांधीजी भी बा का बड़ा ध्यान रखते। कहीं भी जाते तो उन्हें कहकर जाते। बा रामायण, महाभारत का नियमित पाठ करती। कभी-कभी दूसरों से भी सुनती तो उनकी हर गलती पकड़ उन्हें डांटडपट भी करतीं। नेहरूजी जब कभी गांधीजी से मिलने जाते तो कस्तूरबा से अवश्य भेंट करते बल्कि उनसे मिलने में अधिक समय भी देते। बा सदैव खद्दर पहनतीं। उनकी साड़ी लाल रंगी किनार लिए होती।

वे सदैव गांधीजी द्वारा काते गए सूत का कपड़ा पहनतीं। नाथद्वारा की नारियल की काचली की बनी चूड़ियां उन्हें अधिक अच्छी लगतीं जिन्हें वे सदैव पहने रखतीं। मरने के बाद वे चूड़ियां भी उन्हीं के साथ गईं। कस्तूरबा ने उमिया बेन को भी वे चूड़ियां दीं जो उनके पास सुरक्षित सम्भली हुई रहीं। अपने सिर पर वे सोने की सूंप रखतीं।

एक दिन बा के पास कोई सोने के काम वाली जरी की साड़ी छोड़ गया।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन
उदयपुर, मंगलवार 15 अक्टूबर 2019

सम्पादकीय

भूली बिसरी लोकविधाओं की सुध

पृथ्वी पर अगर कोई अद्‌भुत, अभूतपूर्व और अजूबा स्थान है तो वह भारत है। जितने भी चमत्कार और रहस्य रोमांच की घटनाएं हो सकती हैं वे यहीं मिलेंगी। यहीं विभिन्न लोकों के प्राणी भेष-वेश बदलकर आते हैं। भूतों, प्रेतों तथा दिव्यात्माओं के उत्सव समारोह मेले-ठेले यहीं लगते हैं। यहीं ऐसी गुफाएं, कंदराएं हैं जिनमें हजार-हजार बरस के साधु, तपसी हवाभाखी बने हुए हैं। यहीं पाण्डव हिममानव के रूप में मिलते हैं।

ऐसा ही यहां का लोक अर्थात् जनजीवन है। वनवासी आदिवासी और अन्य अनेक जाति वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय, पंथ से जुड़े समाज। विचित्र खानपान, रहन-सहन, भाषा-बोली, संस्कृति-संस्कार, धर्म-कर्म, कथा-गाथा, ख्याल-तमाशे, लीला-स्वांग, प्रदर्शन-प्रहसन और राग-रंजन।

आजादी के बाद को ही लें। प्रदर्शनधर्मी जनकलाओं के जो अनेक रूप सदाबहार थे वे अब नहीं रहे। उन गांवों में जाकर पता लगाने पर वहां के निवासी भी यह जानकारी नहीं दे सकते कि उनके वहां वे विधाएं थीं। उन कलाकारों के घरवाले भी नहीं बता पायेंगे कि उनके वहां ऐसे कई कलाकार हुए जिन्होंने दूर-सुदूर तक अपनी कलाधर्मिता की पहचान बनाई और नाम रोशन किया।

ऐसे रावलों के खेल, भवाइयों के कौतुक, बैठकी ख्यालों के दंगल, रंजक देते विविध छन्दी आशु रचनाकारी वाले हार-जीत के शास्त्रार्थ, नानू दूलिया के चिड़ावी शैली के ख्याल, हाथरसी रंगत के नत्थाराम के खेल, लावणीबाजी के तमाशे, राम जीवन के मंगलाचारी मेवाड़ी ख्याल, तेज कवि के रम्मती ख्याल, सींग वाले शेरों के दहाड़ते नृत्य, अमरसिंह राठौड़ के कठपुतली खेल, टौंक के पठानी संस्कृति के पड़ाव दर्शाते चार बैत, अलवर के सांगीत दंगल, अलीबक्षी खेल, भरतपुर के होरंगे, फुलेरा की लीलाएं जैसे अनेक नाम, नामी विधाएं अपना खाता नहीं खतातीं।

इन्हें खेलने वाले कलाकार जान हथेली पर ले सांसें अटकाने तक का जोखिम लेते पर काम में जरा भी कोताई नहीं आने देते। पीछोला तालाब पर राजमहलों से लेकर छोर के अन्त तक अथाह जलराशि के ऊपर लाव पर तमाशा दिखाती नटनी के साथ राजकाज के लोगों ने जो छल किया उससे नटनी को बीच मंझधार में अपनी जान गंवानी पड़ी जिसकी गवाह देता नटनी का चबूतरा नैना चाल्या धारवा बना हुआ है।

चित्तौड़गढ़ के बसी में होली पर बारूद की भूंगलियों से खेलते खिलाड़ी के जान गंवा बैठने पर अब वह कमाल देखने को नहीं मिलता। अपनी पूंछ में आग लगाकर लंका को तबाह करने वाला हनुमान रस्सी पर पेट के बल रेंगता धराशायी होते अपनी इहलीला समाप्त करने के कारण रासधारी ख्याल सदा के लिए राम नाम सत्य कर गये। पश्चिमांचल के रेगिस्तानी रजकणों में जन्म विवाह खेत खलिहान से लेकर घर-परिवार अड़ोस-पड़ोस तथा समस्त समुदाय के सहयोग, हेलमेल सेवा सहकार से निर्मित जनोपयोगी कार्यों के साथ रंजनपरक सरोकार लाह और भणत अब कहीं इतिहास के पृष्ठ नहीं खोलते।

तब भी वह कहावत जिन्दा है, घी खा गए तो कुल्हड़ मौजूद है। दीया तले अन्धेरा है पर प्रकाश सदैव के लिए ओझल नहीं हुआ है। खण्डहर भी बीते इतिहास की गूंज देते हैं। दीवालों के कान और तलवारों की म्यान से पूछो अपने जमाने के जंग।

अपने खोये पर आंसू बहाने से कुछ मिलने वाला नहीं है। सब समय सार्थक है। कहीं कुछ खोया नहीं है। फिर से जगने और जगकर खोज लाने की विद्या प्राप्त करने के लिए आंख तथा अलख की पहचान पानी होगी।

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा।
आज नहीं तो, कल निकलेगा।।
अर्जुन के तीर सा सघ,
मरूस्थल से भी जल निकलेगा।।
मेहनत कर, पौधों को पानी दे,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।।
जिन्दा रख, दिल में उम्मीदों को,
गरल के समन्दर से भी गंगजल निकलेगा।।
कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की,
जो है आज थमा-थमा सा, चल निकलेगा।।

-संस्कृति मेघवाल

तेरापंथ महिला मंडल द्वारा कैरी बैग वितरण

उदयपुर। तेरापंथ महिला मंडल उदयपुर द्वारा सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त भारत महा अभियान शुरू किया गया। अध्यक्ष सुमन डागलिया, मंत्री सीमा बाबेल एवं सदस्यों ने मुखर्जी चौक स्थित सब्जी मंडी व किराना स्टोरों पर जा-जाकर प्लास्टिक की थैली उपयोग में न लेने अपील की। उन्होंने प्लास्टिक से होने वाले नुकसान की जानकारी दी और कपड़े या कागज की थैली उपयोग में लेने का आह्वान किया। इस दौरान मंडल की ओर सो जुट की थैलियों का वितरण किया गया।

इंढ़ाणी

- नन्दकिशोर शर्मा-

मांड प्रदेश में एक साहुकार रहता था। उसके घी की दुकान थी। उस गाँव की औरत घी का घड़ा भर कर साहुकार के यहाँ बेचने के लिए आई।

साहुकार ने घी का घड़ा खाली कर अपने बर्तन में घी डाला तथा उसका तौल करने लगा। घड़े को वापस उस इंढ़ाणी पर रख दिया। थोड़ी देर में उसने देखा घड़ा घी से वैसे ही भरा है। उसने दो तीन बार ऐसा किया। वह घड़ा खाली करता लेकिन वह पुनः भर जाता। वह समझ गया इसमें घी वाली महिला की इंढ़ाणी में करामात है।

तब उसने उससे कहा कि तुम इंढ़ाणी और घड़े के पैसे ले लो और इसको यही छोड़ जाओ। वह मान गई। तब सेठ ने महिला को चाँदी की चवनी दी। वह खुश होकर घर चली गई। लेकिन साहुकार इस इंढ़ाणी से मालामाल हो गया। क्योंकि उसे यह मालूम हो गया था कि यह इंढ़ाणी (अराई) जो मांड प्रदेश में उगने वाली चितराम बैल की बनी हुई है। इस संबंध में न तो वह जानता था न वह महिला जानती थी। साहुकार मालामाल हो गया। उसने इस धन से एक जैन मन्दिर बनाया तथा अनेक धार्मिक एवं सामाजिक कार्य किये।

इंढ़ाणी गोल आकार के कपड़े, रस्सी एवं मूंझ की बनाई जाती है। पानी का घड़ा तथा अन्य भारी सामान सिर पर रखने के लिए बनाई जाती है। चित्रराम बैल प्रकृति प्रदत मांड प्रदेश में मगरों के ऊपर उगने वाले घास-फूस तथा पौधों के साथ उगती है।

रंगमंच के कलाकार जयपुर निवासी गगन मिश्र ने 13 अक्टूबर को डॉ. महेन्द्र भानावत से उनके निवास पर भेंट की। डेढ़ घण्टे की मुलाकात में मिश्र ने बच्चों से सम्बन्धित लोककथाओं के बहाने राजस्थान मुख्यतः मेवाड़ क्षेत्र में सृजित साहित्य पर उम्दा चर्चा की। मिश्र चाहते हैं कि बाल रंगंच को लेकर वे कुछ प्रयोग करें।

गत दिनों प्रो. जगमल सिंह ने अपने उदयपुर प्रवास के दौरान शब्द रंजन कार्यालय में डॉ. महेन्द्र भानावत और उनके साथ डॉ. देव कोठारी से भेंट की। प्रो. जगमल का अधिकांश समय सुदूर मणिपुर जैसे क्षेत्रों में अध्यापन में रहा। भेंट के दौरान उन्होंने अपना लिखा साहित्य डॉ. भानावत को भेंट किया। उन्होंने पुरानी यादों को सरसता के साथ ताजा किया।

उदयपुर में 04 अक्टूबर को प्रसिद्ध कॉमेडियन कृष्णा अभिषेक के साथ डॉ. तुक्तक भानावत।
श्री कृष्णा की सर्वाधिक ख्याति कपिल शर्मा के कॉमेडी शो में सपना नामक महिला किरदार से है।

मोबाइल प्रशिक्षण बैच सम्पन्न

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांग एवं निर्धनजन के लिए चलाये जा रहे विभिन्न व्यवसायोंमुंख प्रषिक्षणों के अन्तर्गत सोमवार को 45 दिवसीय निःशुल्क मोबाइल सुधार प्रशिक्षण बैच का समापन हुआ।

नारायण सेवा संस्थान की निदेशक वंदना अग्रवाल ने बताया कि प्रशिक्षण लेने वाले 12 प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र के साथ अपना व्यवसाय शुरु करने के लिए रिपेयरिंग उपकरण की किट निःशुल्क भेंट की। प्रशिक्षक भूपेन्द्र पालीवाल ने प्रशिक्षण प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

कैलाश मानव 'भीण्डर रत्न' से सम्मानित

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक पद्‌मश्री कैलाश 'मानव' को भीण्डर में नगरपालिका द्वारा आयोजित सार्वजनिक समारोह में 'भीण्डर रत्न' से सम्मानित किया गया। क्षेत्रीय विधायक गजेन्द्रसिंह शक्तावत ने

कहा कि भीण्डर में जन्मे मानव ने अपनी सेवा यात्रा से न केवल भीण्डर अपितु देश-प्रदेश का नाम रोशन किया है। इस अवसर पर श्री मानव को शक्तावत, पालिकाध्यक्ष हेमन्त साहू व उपाध्यक्ष गिरीश सोनी ने अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। संचालन महिम जैन ने किया।

पोथीखाना

गणगौर-गवरजा

राजस्थान पूरे देश में सबसे अधिक रंगीला प्रदेश कहा गया है। जितनी रंग-विविधता यहां के भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं अन्यान्य क्षेत्रों में मिलती है वह अद्‌भुत है। जितने त्यौहार, उत्सव, मेले-सामेले, व्रत-अनुष्ठान, विविध गायकी प्रसंग, उद्योग-धन्धे, कला-संस्कृतिजनित रूपांकन, नेगचार, जातिगत वैशिष्ट्य, देवी-देवता तथा रहस्यलोक के दृश्य-अदृश्य विधान, खण्डहरों के वैभव, पराशक्तियों के अजूबे देखने को मिलेंगे, अन्यत्र कहीं नहीं मिलेंगे।

यहां के त्यौहारों में गणगौर का त्यौहार कई दृष्टियों, मान्यताओं, विश्वासों तथा मिथकों के लिए जाना जाता है। इसको लेकर अब तक अनेक तरह की सामग्री प्रकाश में आ चुकी है।

सभी जातियों तथा समाजों में इस त्यौहार का महत्व है। इससे उसकी परिव्याप्ति तथा लोकधारणाओं का पता चलता है। कई छोटी-बड़ी पुस्तकें भी इस त्यौहार को लेकर लिखी गई हैं। बहुत सी सामग्री लोककण्ठों पर मिलती है जिसका लिखा जाना शेष है। बालक-बालिकाओं तथा विवाहित-अविवाहितों में इसकी विविध प्रकार की मान्यताओं और उनके परिणामों को लेकर भी बड़ी विपुल जानकारी एकत्र की जा सकती है।

प्रस्तुत गणगौर-गवरजा पुस्तक के सम्पादक डॉ. बाबूलाल शर्मा ने बड़े परिश्रम, अध्ययन और कुशल-कौशल से इसका सम्पादन कर इस त्यौहार की व्यापकता, प्राचीन सन्दर्भों से इसकी पौराणिकता तथा विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलन की विशेषताओं को बड़ी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करने का भगीरथ प्रयास किया है।

पुस्तक के सम्बन्ध में शर्माजी की लिखी टीप पठनीय है। वे लिखते हैं- गौरी पूजन के पौराणिक सन्दर्भ, राजस्थान के गणगौर पूजन में पूरी तरह एक लोकोत्सव का रूप धारण कर लेते हैं। गणगौर से सम्बन्धित बहुत से गीत, इसे प्राचीन काल में मनाए जाने वाले मदनोत्सव से जोड़ देते हैं। गणगौर पूजन के प्रारम्भ में होलिका दहन की राख से निर्मित पिण्डयों की

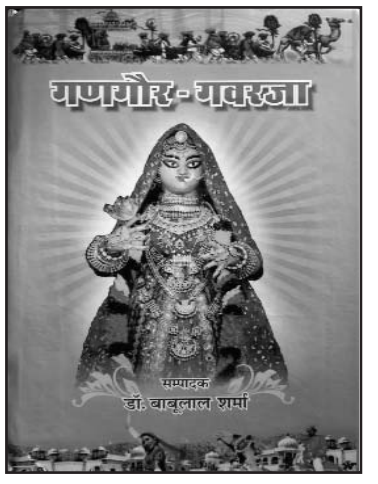

पूजा, सूरज रोटा का व्रत, घुड़ला घुमाने की प्रथा तथा अन्यान्य लौकिक घटनाएं-मान्यताएं सम्मिलित हो जाने से इसकी उपयोगिता बढ़ गई है।

प्रस्तुत ग्रंथ में गौरी पूजन लोकोत्सव के सभी पक्षों यथा पूजा विधि, गीतों, इतिहास, परम्परा, मान्यताओं एवं राजस्थान के विभिन्न अंचलों व अन्य प्रांतों में गवरजा-उत्सव आदि का समावेश करने के उद्‌देश्य से शास्त्रीय एवं पौराणिक तथा लोकप्रचलित सन्दर्भों-प्रसंगों का संकलन विभिन्न ग्रंथों व विद्वानों के साथ-साथ उन लोगों से भी किया गया है जो इस लोकपर्व के आयोजन में सक्रिय भागीदारी रखते हैं।

यह पुस्तक 9 अध्यायों में संयोजित है जिनके शीर्षक हैं- गौर ये गणगौर माता, गणगौर पूजन, राजस्थान का रसीला त्यौहार, ओ म्हारी चन्द्रगवरजा, गणगौरों की सवारियों के मेले, दक्षिणी राजस्थान का लोकनाट्य 'गवरी', गणगौर पर्व सम्बन्धी कुछ ऐतिहासिक प्रवाद, महादेवी गौरी (गवरजा / गणगौर) तथा अन्नपूर्णा-भवानी-देवी गौरी के कुछ भावपूर्ण स्तोत्र।

इस पुस्तक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि गणगौर पर अब तक जहां-जहां जो कुछ प्रकाशित हुआ, उसे दे दिया गया है। जगह-जगह जिन-जिन लेखकों के कथन, वक्तव्य, विचार दिये गये हैं, उनके नाम दिये गये हैं पर अच्छा होता यदि कहीं उन पत्र-पत्रिकाओं या ग्रंथों के सन्दर्भ दिये जाते ताकि यह लगता कि सम्पादक ने कहां-कहां से इतनी महत्वपूर्ण सामग्री का अध्ययन कर इतना बड़ा सार्थक श्रम प्रयास किया है।

अब तो यह सारी सामग्री बड़ी मुश्किल से ही उपलब्ध हो सकती है। जो पत्र-पत्रिकाएं और पुस्तकें जहां से प्रकाशित हुई हैं उनमें से कुछ तो प्रकाशन स्थल ही नहीं हैं और हैं भी तो उन्हें पठनार्थ तो क्या अवलोकनार्थ भी बड़ी मुश्किल से कोई शायद ही प्राप्त कर सकेगा।

भारतीय विद्यामन्दिर, 12 / 1, नेली सेनगुप्ता सरणी, कोलकाता द्वारा इसका प्रथम संस्करण 2011 में निकला था। सन् 2019 का यह द्वितीय संस्करण इसकी लोकप्रियता को रेखांकित करता है। सुप्रसिद्ध राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर इसका वितरक-प्रकाशक है। कुल 248 पृष्ठों की आकर्षक कवर लिये सजिल्द इस पुस्तक की कीमत 400 रूपया है।

-डॉ. कहानी भानावत

मां मुझे माफ करना !

- डॉ. पुरूषोत्तम छंगाणी -

बहुत दूर दुर्गम थार प्रदेश में एक गांव था-कोकड़। पेमली का विवाह इसी गांव में हुआ था। औरों की तरह पेमली भी जान गई थी इस विवाह का समग्र इतिवृत्त। गांव की जो भी वहां ब्याही जाती थी वह कभी वापस नहीं आया करती।

गौने पर जाते समय जब पेमली विकल मन से अपनी मां की छाती से चिमट कर पूछने लगी कि उसका विवाह ऐसी जगह क्यों किया गया है जो दुर्गम है और जहां बस अभाव ही अभाव है तो मां आंख नहीं मिला सकी।

बिलखती हुई बेटी को पुचकारते हुए मां का वही प्रत्युत्तर था जो गांव की हर मां ऐसे प्रसंग में दिया करती थी कि भाग्य में जो लिखा होता है, कोई मिटा नहीं सकता। मां के ऐसे प्रत्याशित कथन से पेमली के मन में कचोट हुई कि विधाता इस गांव की बेटियों का भाग्य आंसुओं की स्याही से क्यों लिखता है।

पेमली ने तत्क्षण बात पलटी और मां से कहा -'कम से कम ससुराल से लिवा लाने के लिए बापू को तो भेज देना।'

'बेटी तेरे बापू लाचार हैं, कैसे आ सकेंगे?'

मां के इस टालने वाले उत्तर में पेमली को स्पष्टत: बहाना दिखाई दिया। इस पर उसने दूसरा तीर मारा -'तो फिर मेरे भोलू भैया को ही भेज देना।'

'अरे बेटी, भोलू तो अभी बहुत छोटा है। इतनी दूर अकेला कैसे आ सकेगा।'

अंत में पेमली ने जैसे ब्रह्मास्त्र को काम में लिया -'मां तुम खुद ही चली आना न मेरी ससुराल।' मां के पास इस आग्रह का पूरा काट था। वह बोली-

'बेटी, तेरा गांव कहां है, मार्ग का भी कोई अता-पता नहीं है मुझे। मार्ग में काले मुहं वाली भेड़ें चरती हुई मिलेगीं। गांव में तेरा झोंपड़ा कैसे ढूंढ़ पाऊंगी मैं।'

'आसान है, केवल मेरे घर के बाहर ही पीपल का पेड़ लगा होगा।'

'पर मैं तो तुझे पहचान भी नहीं पाऊंगी।'

घनी विवशताओं के अटूट जाल में जकड़ी हुई मां बहाने पर बहाने बनाने के सिवाय और कर भी क्या सकती थी। इससे अधिक क्या तर्क कर सकती थी।

पेमली के पास मां के लिए इसका भी प्रत्युत्तर था, परन्तु दिया नहीं। मां की धड़कनों व आंसुओं ने मर्मान्तक गति जो पकड़ ली थी। हल्के आक्रोश में पेमली पास में ही एक कोने में खड़ी अणची दादी से जाकर लिपट गई। दादी ने मां-बेटी के संवाद पूरे सुन लिये थे। पेमली की पीठ पर दुलार की थपकियां देती हुई वह बोली -'तेरी मां बेचारी क्या करे। भेड़-बकरियों की तरह बेची गई कोई भी वस्तु कैसे वापस ली जा सकती है? मर्दों को तो सिर्फ पैसा चाहिए। वे क्या समझें मन की पीर को।'

मां अभी भी वहीं खड़ी-खड़ी आसूं बहा रहीं थी। पेमली को मां अत्यंत दयनीय लगने लगी। वह दौड़ कर मां के गले लग गई। पेमली की सिसकियां जैसे बार-बार कह रहीं थी- 'मां, मुझे माफ करना।' मां ने उसे बाहों में जोर से कस लिया था। मां-बेटी की विवशता आंसुओं में उजागर हो रहीं थी।

साहित्यिकों के बीच 'निर्भय मीरां'

दिल्ली में साहित्य मनीषी विष्णु प्रभाकरजी से उनके निवास पर जब मैं मिलने पहुंचा तो वहां प्रो. विजयेन्द्र स्नातक बैठे मिले। पहले मेरा कभी उनसे मिलना नहीं हुआ था। स्नातकजी के हाथ में डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित 'निर्भय मीरां' नामक पुस्तक थी। इसे पढ़ने के लिए वे प्रभाकरजी से ले गये थे। उस दिन दोनों महामनीषियों के बीच यह पुस्तक ही चर्चा की प्रमुख केन्द्र बनी रही। स्नातकजी ने कहा, पुस्तक आद्योपान्त पठनीय बनी रही। एक अन्य लोक में मीरां हमारे साथ या मीरां के साथ हम रहते चले गए पर प्रश्न है कैसे इस पुस्तक को प्रामाणिक माना जाय!

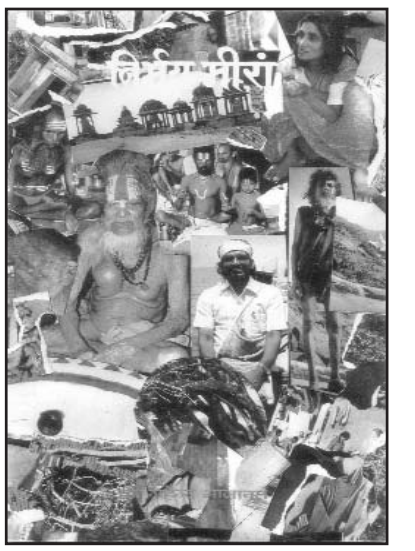

इस पर गम्भीर हो प्रभाकरजी बोले, अद्‌भुत चीजें और अद्‌भुत लेखन सभी को आकृष्ट किये रहता है। पठन के दौरान मीरां आपके साथ या आप मीरां के साथ बने रहे, इसका क्या प्रमाण! हर चीज का प्रमाण नहीं होता पर उसका अस्तित्व स्वीकार करते हैं, यही सबसे बड़ा प्रमाण है। जिसके सबूत नहीं हैं वहां हमें चुप रहते हुए निरन्तर उसकी शोध-खोज करते रहना चाहिये।

प्रभाकरजी के इस कथन से मैं प्रो. स्नातकजी को गहन गम्भीर हुए देखता रहा और सोचता रहा किसी के लेखन को बिना सोचे, समझे कमतर आंकने के पीछे कहीं न कहीं अपने को बड़ा और उसको छोटा समझने का भाव भी छुपे रूस्तम की तरह हमारे मन में मरोड़ लिये रहता है।

- डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर

चलाचल

पीपल का एक जीर्ण पत्ता
धीरे से लरज कर
गिर पड़ा धरती पर।
हवा का एक हलका सा
झोंका तो आया था,
पर वह तो बहाना मात्र था।
असल में तो डाली ने ही
उसे धक्का दिया था।
हवाएं तो उस दिन भी
बहुत तेज थीं
जिस दिन ताम्रांकुर के
रूप में इसने
अपनी पूरी टीम के साथ
डाली पर जमाया था
अपना डेरा।
हवा ने उसे दुलराया
फुनगी ने उसे मुकुट बनाया
जमीन ने पानी पिलाया
सूर्य ने ऊर्जा प्रदान की।
धीरे-धीरे ताम्रता हरीतिम हुई,
यौवल लहराया,
प्रौढ़ता जागी
पत्ता बोझिल हो गया
उसके पैर लड़खड़ा गये।
जन्म और मृत्यु का
यह चलाचल खेल
इसी तरह चलता रहा है,
चलता रहेगा।

-शासनश्री मुनि सुखलाल

अमिताभ बने बीकाजी के ब्राण्ड एम्बेसेडर

उदयपुर। बीकाजी फूड्स इंटरनेशनल लि. ने महानायक अमिताभ बच्चन को अपना ब्राण्ड

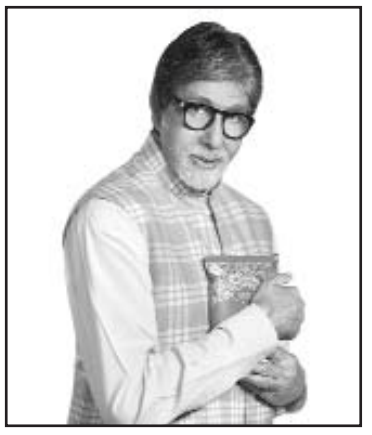

एम्बेसेडर बनाया है। नया कैम्पेन 'अमितजी लव्स बीकाजी' इस ब्राण्ड को आज की पीढ़ी का पसंदीदा स्नैकिंग विकल्प बनाने पर केन्द्रित है। मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं निदेशक दीपक अग्रवाल ने कहा कि इस कैम्पेन की परिकल्पअना बनाने के दौरान सबसे बड़ा काम युवाओं को सांस्कृतिक अल्पाहार से जोड़ना था। इसका लक्ष्य है उन युवाओं और ग्राहकों के बीच बीकाजी के आकर्षण को बढ़ाना, जो सांस्कृतिक के बजाए आधुनिक स्नैकक्स् को पसंद करते हैं। बीकाजी चाहता है कि युवा रोजाना के स्नैक्सों के माध्यम से अपनी संस्कृति से जुड़ें और उसका उत्सव मनाएं। श्री अग्रवाल के नेतृत्व में बीकाजी फूड्स इंटरनेशनल लिमिटेड भारत और विश्व में तेजी से बढ़ रहा है और रेडी-टु-ईट तथा फ्रोजन फूड्स के क्षेत्र में भी विस्तार करना चाह रहा है। इस कैम्पेन का संपादन करने वाले और तीन दशक से अधिक समय से इस ब्राण्ड से जुड़े कम्यूनिकेशन पार्टनर्स 3 ब्रदर्स एंड फिल्स के मैनेजिंग पार्टनर सागर पारीख ने कहा कि यह कैम्पेन युवाओं को एथनिक स्नैक्सु का आनंद लेने के लिये प्रोत्साहित करता है। अमितजी को हर वर्ग के लोग पसंद करते हैं, तो एक मजेदार और मनोरंजक तरीके से संदेश देने के लिये वह सर्वश्रेष्ठ विकल्प हैं।

'कोना कोना ख्वाब' लोन उत्सव की घोषणा

उदयपुर। भारत में त्योहारी सीज़न शुरु हो चुका है। भारत सरकार तथा भारतीय रिज़र्व बैंक मौद्रिक व राजकोषीय उपाय कर रहे हैं ताकि अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिले। इन प्रयासों में योगदान देते हुए कोटक महिन्द्रा ग्रह्प (कोटक) ने राजस्थान में 'कोना कोना ख्वाब' लोन उत्सव की घोषणा की है जिसके तहत पूरे भारत में वे अपने कंज्यूमर, ऐग्री व ट्रैक्टर लोन सैगमेंटों के अंतर्गत लोन प्रोडक्ट्स में आकर्षक दरें व ऑफर पेश करेंगे।

कोटक महिन्द्रा बैंक के सीनियर ऐक्ज़ीक्युटिव वाइस प्रेसिडेंट, पुनीत कपूर ने कहा कि हमारा बैंक बड़े पैमाने पर विभिन्न इलाकों व ग्राहक खंडों में कर्ज मुहैया कराने का कारोबार करता है। अर्थव्यवस्था में नकदी पर्याप्त मात्रा में है, इस वक्त की जरूरत है कि देशभर में ग्राहकों तक पहुंचा जाए और मांग बढ़ाने के लिए कर्ज तक आसान पहुंच दी जाए। कई अध्ययनों से पता लगा है कि पैसे के प्रबंधन में महिलाएं बेहतर होती हैं- पैसे बचाने में भी और कर्ज लेने में भी। कोटक में हम नारी शक्ति में दृढ़ विश्वास रखते हैं, वह भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

हमारा मानना है कि 'कोना कोना ख्वाब' लोन उत्सव के जरिए महिलाओं को मदद देकर और वित्तीय सेवाओं तक उनकी पहुंच बढ़ाकर हम ग्राहक मांग व अर्थव्यवस्था को व्यापक बढ़ावा दे सकेंगे। 'कोना कोना ख्वाब' लोन उत्सव के तहत कंज्यूमर व ऐग्री लोन की रेंज पर प्रतिस्पर्धी ब्याज दरें, आकर्षक ऑफर और तुरंत मंजूरी दी जा रही है।

फैशन और लाइफस्टाइल एक्सिबिशन द पॉपशॉप

उदयपुर। जानीमानी फैशन डिजाइनर निकेता ठक्कर की दो दिवसीय 'फैशन और लाइफस्टाइल

एक्सिबिशन द पॉपशॉप' 9 व 10 अक्टूबर को होटल गोल्डन ट्यूलिप में आयोजित हुई। प्रदर्शनी का उद्घाटन मेवाड़ राजघराने की निवृत्रीकुमारी मेवाड़ ने किया।

राजस्थान के कई ऐग्जिबिशन का हिस्सा रह चुकी निकेता ने पहली बार उदयपुर में अपना बेमिसाल कलेक्शन पेश किया है। इसमें निकेता के कई नए कलेक्शंस पेश किये गए। दो दिवसीय द पॉपशॉप फैशन ऐग्जिबिशन में देशभर के 40 से अधिक डिजाइनर्स ने अपनी बेहतरीन क्रिएटिविटी के साथ भाग लिया। उल्लेखनीय है कि निकेता ठक्कर कई गुजराती सेलेब्रिटीज़ के साथ-साथ ढेरों बॉलीवुड हस्तियों के लिए बेहतरीन डिजाइनर ड्रेसेस तैयार कर चुकी हैं। उन्हें कच्छ शक्ति अवार्ड, ज़ी यंग एचीवर अवार्ड, मंतव्य फाउंडेशन द्वारा बेस्ट फैशन डिज़ाइनर अवार्ड और अलुवा फैशन वीक के दौरान बेस्ट फैशन डिजाइनर के अवार्ड से नवाजा जा चुका है।

आर्ची ग्रुप द्वारा पांच हजार क्लोथ बेग्ज वितरण का लक्ष्य

उदयपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान को समर्थन देते हुए

आर्ची ग्रुप के आर्ची गेलेक्सी द्वारा कपड़े के बेग के निशुल्क वितरण का आंदोलन प्रारंभ किया गया। आर्ची गेलेक्सी के मुख्य भागीदार ऋषभ भाणावत एवं संजय बाठिया ने बताया कि उन्होंने अपने अन्य सहकर्मियों के माध्यम से 'प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान, एक छोटी सी पहल पर्यावरण के नाम' कैम्पेन प्रारंभ किया। देबारी चौराहे पर मुख्यमंत्री जन आवास योजना के तहत बन रहे आर्ची गेलेक्सी से प्रारंभ कर इस अभियान के अंतर्गत अब तक एक हजार बेगों का वितरण किया गया है। ये बेग मुख्यत: घंटाघर, मल्लातलाई, बापूबाजार, फतहसागर आदि क्षेत्रों में वितरीत किये गए। भाणावत ने बताया कि आर्ची ग्रुप द्वारा शहर के विभिन्न परिक्षेत्रों में इस प्रकार के पांच हजार बेग्ज वितरित करने का लक्ष्य रखा गया है।

एयरटेल पेमेंट्स बैंक के साथ भागीदारी

उदयपुर। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस ने एयरटेल पेमेंट्स बैंक के साथ कॉर्पोरेट एजेंसी समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। एयरटेल पेमेंट्स बैंक ग्राहकों के पास अब जीवन बीमा और बचत योजनाओं तक आसान पहुंच होगी, जिससे वे अपने परिवारों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान कर सकेंगे और लम्बी सेविंग कर सकेंगे। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के प्रबंध निदेशक और सीईओ एन. एस. कन्नन ने कहा कि इस पार्टनरशिप का उद्देश्य एयरटेल पेमेंट्स बैंक के विस्तृत वितरण नेटवर्क और डिजिटल पहुंच का लाभ उठा कर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के बेजोड़ और किफायती जीवन बीमा उत्पादों को लाखों भारतीयों तक पहुंचाना है। शुरुआती कदमों में एयरटेल पेमेंट्स बैंक के ग्राहकों को आईसीआईसीआई प्रू आईप्रोटेक्ट स्मार्ट जैसे प्रोटेक्शन प्लेटफार्म और आईसीआईसीआई प्रू अनमोल बचत सेविंग प्लेटफार्म उपलब्ध करवाया जाएगा।

एक्मे स्टार हाउसिंग फायनेंस राजस्थान में अपनी स्थिति और मजबूत करेगा

उदयपुर। किफायती आवास (एफोर्डेबल हाउसिंग) क्षेत्र में सक्रिय हाउसिंग फायनेंस कम्पनी एक्में स्टार फायनेंस लि. ने घोषणा की कि वह राजस्थान में अपनी स्थिति को और भी मजबूत कर रहा है। एक्में स्टार एचएफसी विगत एक दशक से भी अधिक समय से राजस्थान में सक्रिय है, और पहलीबार घर खरीदने वालों के लिए क्रेडिट एक्सेस को सक्षम करने के एक व्यापार फिलोसॉफी के साथ काम करता है जो कम लागत वाली आवास इकाइयों की खरीद करना चाहते हैं।

एक्में स्टार हाउसिंग फायनेंस लि. के अध्यक्ष, प्रबन्ध निदेशक एवं सीईओ आशीष जैन के अनुसार कम्पनी का विस्तार राजस्थान के मौजूदा भौगोलिक आधार में विकास योजनाओं को ध्यान में रखते हुए किया जाएगा और तदनुसार किफायती आवास क्षेत्र में अच्छी व्यावसायिक संभावनाओं वाले स्थानों को शॉर्टलिस्ट किया गया है। कम्पनी का उद्देश्य प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई) अधिसूचित शहरों में खुदरा स्तर के लक्षित उपयोगकर्ताओं के लिए मांग स्तर पर हस्तक्षेप प्रदान करना होगा। कम्पनी का ध्यान आवासीय परियोजनाओं पर रहेगा जहां इकाइयां पीएमएवाई के तहत सीएलएसएस दिशा निर्देशों द्वारा निर्धारित मानदंडों को पूरा करती हों।

ड्यू एरिना के साथ जुड़े 1.5 मिलियन गेमर्स

उदयपुर। माउंटेन ड्यू की बेहद सफल वार्षिक गेमिंग प्रॉपर्टी ड्यू एरिना के चौथे संस्करण का जबरदस्त फिनाले के साथ समापन हुआ। इस बार देश भर के 1.5 मिलियन गेमर्स ने इसमें हिस्सा लिया जिससे यह भारत में अब तक की सबसे बड़ी गेमिंग चैंपियनशिप बन गई है। ग्रैंड फिनाले में लोकप्रिय रियलिटी टेलीविज़न स्टार प्रिंस नरूला शामिल हुए और प्रशंसकों के साथ डोटा और स्ट्रीट फाइटर जैसे गेम खेले। प्रिंस ने कहा कि गेमिंग भारत में तेजी से लोकप्रियता हासिल कर रहा है। यह हमारे चारों ओर है और जल्द ही देश भर के युवाओं के मनोरंजन का सबसे बड़ा साधन बनने वाला है।

फिनाले में भारत के प्रमुख पबजी खिलाड़ियों में से एक नमन 'मॉर्टल' माथुर ने भी हिस्सा लिया। इस खिलाड़ी ने बैटल रॉयले गेम में अकेले एक के बाद एक टीमों का सफाया कर दिया।

नसीबपुरी, निदेशक, माउंटड्यू एंड एनर्जी, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि उपभोक्ताओं को बेहतरीन अनुभव देने के लिए नए रुझानों के साथ प्रयोग करते हुए ड्यू एरिना हर संस्करण के साथ नई ऊंचाइयां हासिल कर रहा है। चौथे संस्करण की शुरुआत इस साल मार्च में हुई और भारत के 41 शहरों की 220 जगहों को कवर किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान में संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' के सान्निध्य में अन्तर्राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया गया। इसमें नारायण चिल्ड्रन की बालिकाओं ने भाग लिया।

संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल ने कहा कि कन्या भ्रूणहत्या, लिंगभेद, बाल विवाह और दहेज प्रथा जैसी कुरितियों की रोकथाम के लिए सार्थक प्रयास होने चाहिए। कार्यक्रम में विविध प्रतियोगिताएं हुई और उपहारों का वितरण किया गया। बालिकाओं ने गीत-नृत्य सहित सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि समाज को महिलाओं के सशक्तीकरण की दिशा में जागरूक बनाने के लिए आज का दिन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लड़कियां सुरक्षित, शिक्षित व स्वस्थ जीवन जीएं इसका हम सबको प्रयास करना होगा। यही बालिकाएं आगे चलकर सुखी एवं समृद्ध परिवार तथा समाज की धुरी बनने वाली हैं।

पुरुष फुटबाल लीग में जिंक फुटबाल अकादमी को तीसरा स्थान

उदयपुर। जिंक फुटबाल अकादमी के 16 साल के कम उम्र के युवा खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए राजस्थान विश्वविद्यालय (जयपुर) में आयोजित राजस्थान रा?य पुरुष लीग में तीसरा स्थान हासिल किया है। राजस्थान फुटबाल संघ द्वारा आयोजित इस लीग में राजस्थान की शीर्ष-8 टीमों- जेईसीआरसी एफसी, मेवाड़ एफसी, एयू राजस्थान एफसी, नीरजा मोदी अकादमी, प्लेस्पेस एफसी, अजमेर एफसी, पूर्णिमा पैंथर्स और जिंक फुटबाल अकादमी ने हिस्सा लिया।

उम्र के अंतर से बेखबर जिंक फुटबाल अकादमी के खिलाड़ियों ने इस लीग में पांच मैच जीते और दो में उनकी हार हुई। इस टीम ने कुल 15 गोल किए जबकि उसके खिलाफ चार गोल हुए। जिंक फुटबाल ने फेयर प्ले अवार्ड भी जीता जबकि इसके शॉट स्टॉपर अनसाई गोयारी ने समापन समारोह में श्रेष्ठ गोलकीपर का पुरस्कार जीता। हिंदुस्तान जिंक द्वारी शुरू की गई इस अकादमी ने अपने अंतिम मैच में एयू राजस्थान एफसी के खिलाफ 3-0 से जीत हासिल की। इससे पहले इस टीम ने मेवाड़ एफसी को 3-2 से , प्लेस्पेस को 3-0 से, पूर्णिमा पैंथर्स को 3-0 और अजमेर एफसी को 3-0 से हराया। इस टीम को नीरजा मोदी फुटबाल अकादमी और लीग चैम्पियन जेईसीआरसी एफसी के खिलाफ हार मिली।

राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीपसिंह शेखावत ने कहा कि मैं जिंक फुटबाल अकादमी के युवा खिाड़ियों को देखकर काफी खुश हूं। यह टीम सीनियर टीमों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खेल रही थी। इसमें कोई शक नहीं कि ये प्रतिभाशाली बच्चे राजस्थान और भारतीय फुटबाल के भविष्य हैं। जिंक फुटबाल अकादमी के मुख्य कोच सुरेश कटारिया ने कहा कि मुझे अपने खिलाड़ियों पर गर्व है। ये फाइनल सीटी बजने तक सीनियर खिलाड़ियों के खिलाफ मैदान में लड़ाकों की तरह खेले। इस लीग में तीसरे स्थान पर आना हमारे लिए खुशी की बात है।

डाट्सुन की अफोर्डेबल सीवीटी लांच

उदयपुर। निसान इंडिया ने अपने डाट्सुन गो और गो+ के सीवीटी संस्करण को क्रमश: 5.94 लाख रुपये और 6.58 लाख रुपये की आकर्षक कीमत पर लॉन्च किया। डाट्सुन गो और गो+ अपने संबंधित सेगमेंट के पहले मॉडल हैं जिन्हें निसान की विश्व स्तर पर प्रशंसित ट्रांसमिशन तकनीक सीवीटी (कन्टिन्यूअस्ली वेरिएबल ट्रांसमिशन) के साथ पेश किया गया है। देशभर के सभी निसान और डाट्सुन डीलरशिप पर इन गाड़ियों की डिलीवरी शुरू हो गई।

निसान मोटर इंडिया प्रा. लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर राकेश श्रीवास्तव ने कहा कि प्रोग्रेसिव मोबिलिटी के हमारे मिशन के अनुरूप हम गाड़ी चलाने के तनाव मुक्त अनुभव की तलाश कर रहे ग्राहकों की मांग को पूरा करने के लिए डाट्सुन गो और गो+ में निसान की सीवीटी तकनीक पेश कर रहे हैं। अपनी श्रेणी में पहली बार लाए गए और सबसे बेहतरीन फीचर्स के साथ डाट्सुन गो और गो+ अपने सेगमेंट में सबसे बेहतर वैल्यू प्रोपोजिशन के साथ आती हैं।

उदयपुर में गांधीजी....

पृष्ठ तीन का शेष

बा ने सोचा कि यह साड़ी देवदास के विवाह में काम आयेगी पर गांधीजी को ज्योंही पता लगा तो उन्होंने बड़ी चतुराई से काम लिया। एक दिन प्रार्थनासभा में उन्होंने कहा कि आश्रम में कोई साड़ी भूल गया है। यह सुनते ही बा उठी और बोली कि वह साड़ी मेरे यहां कोई भूल से छोड़ गया है। वह उठी और तुरन्त साड़ी लाकर गांधीजी को दे दी।

उमिया बेन ने बताया कि बा सभी त्यौहार मनातीं। सारे रीतिरिवाज करतीं। पास में बैठे शंकरलालजी सारी बातें ध्यान से सुन रहे थे। वे बोले, जब मैं विवाह करने गया तो सिर पर मैंने काली टोपी पहनी हुई थी। बा ने उसे ठीक नहीं मानी और उनसे उमिया के लिए सौभाग्यसूचक चूंदड़ी मंगवाई।

उमिया बेन को यह अफसोस ही रहा कि विवाह के बाद गांधीजी उनसे कभी नहीं मिले किन्तु पत्र बराबर लिखते रहे। मनु बेन अवश्य उदयपुर आती-जाती रही। उमिया बेन और शंकरलालजी दोनों स्वतंत्रता सेनानी थे पर पैंशन आदि का कोई लाभ उन्होंने स्वीकार नहीं किया और न स्वतंत्रता सेनानी होने अथवा गांधीजी से अपने नजदीकी रिश्ते को भुनाने अथवा किसी तरह का लाभ प्राप्त करने या गौरव प्राप्त करने का प्रयास किया बल्कि एक सामान्य एवं साधारण नागरिक की तरह ही अपना जीवन बसर किया।

शंकरलालजी ने प्रसिद्ध गांधीवादी नेता हरिभाऊ उपाध्याय तथा दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक शोभालाल गुप्त के साथ जेल की हवा खाई। मेरा उपाध्यायजी से भी अच्छा परिचय रहा। गुप्तजी तो जब-जब भी उदयपुर आते, कनक 'मधुकरजी' के निवास पर ही ठहरते और मुझे याद करते। उन्होंने तब दैनिक हिन्दुस्तान के 'साहित्य, कला और समस्याएं' स्तंभ में मेरे द्वारा मेवाड़ की कई विभूतियों पर लेख लिखवाए और उन्हें प्रकाशित किए। भारतीय लोककला मण्डल द्वारा आयोजित मुख्य मेलों-समारोहों पर भी उन्होंने समय-समय पर मेरे द्वारा प्रेषित लेख छापे। सामरजी के विदेश जाने से पूर्व दिल्ली में हम गुप्तजी से उनके कार्यालय में भी मिले।

स्मृतियां हर समय नहीं उमड़तीं किन्तु जब उमड़ती हैं तो बरसालू बादली की तरह थमने का नाम नहीं लेतीं।

हिमालया नैचुरल शाईन हिना लॉन्च

उदयपुर। हिमालया ने नैचुरल शाईन हिना लॉन्च किया है। नैचुरल शाईन हिना नौ औषधियों एवं शुद्ध राजस्थानी हिना के मिश्रण द्वारा बालों को कंडीशन कर उन्हें प्राकृतिक चमक प्रदान करती है। यह सिर व बालों के लिए सौम्य है तथा इसका कलर लंबे समय तक बना रहता है। यह बालों का सफेद होना रोककर उन्हें सेहतमंद बनाती है। यह 25 ग्राम 15 रूपये, 50 ग्राम 35 रुपये एवं 120 ग्राम 75 रुपये में उपलब्ध है जो सभी प्रमुख रिटेल, आधुनिक ट्रेड एवं ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध है।

पूजा बेदी, ब्रांड मैनेजर - हेयर केयर, कंज्यूमर प्रोडक्ट्स डिवीजन, द हिमालया ड्रग कंपनी ने बताया कि भारत में हेयर केयर सेगमेंट तेजी से बढ़ रहा है। लोग अपने बालों को समय से पहले सफेद होने से रोकने तथा बालों की अन्य समस्याओं के लिए प्राकृतिक समाधान चाहते हैं। हिना उनके लिए एक उत्तम विकल्प है। हम ग्राहकों को ऐसी हिना देना चाहते थे, जिसमें हिमालया का भरोसा मिला हो और जो उत्तम गुणवत्ता की औषधियों से बनी हो।

गठिया सम्बंधित रोगों में समय पर उपचार से इलाज संभव : डॉ. गोयल

उदयपुर। दुनियाभर में 12 अक्टूबर को विश्व आर्थराइटिस दिवस मनाया गया। इस वर्ष की थीम -'डोंट डिले, कनेक्ट टुडे' है। इसके अंतर्गत विश्वभर के गठिया विशेषज्ञ संघ यह सन्देश लोगों तक पहुँचा रहे हैं कि गठिया एवं इम्म्यून रोगों का कोई भी लक्षण होने पर जल्द से जल्द डॉक्टर से संपर्क करें। उदयपुर में सोसाइटी फॉर पेन एंड आर्थराइटिस एवं केयर फाउंडेशन द्वारा एक वर्ष तक संभाग में जागरूकता अभियान चलाया जाएगा।

सोसाइटी के सचिव एवं गठिया रोग विशेषज्ञ डॉ. मोहित गोयल ने बताया कि अगले एक वर्ष में पंचायत स्तर से लेकर शहर स्तर तक विभिन्न जनचेतना कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। रोगियों एवं वालंटियर्स को भी ''जोड़ों के प्रहरी'' के रूप में जोड़ा जाएगा। इन कार्यक्रमों के जरिये आमजन तक यह सन्देश पहुँचाया जाएगा कि गठिया एवं सम्बंधित रोगों का समय पर उपचार कराने से दर्द, सूजन, जकड़न व अन्य तकलीफों से निजात पाई जा सकती है।

डॉ. गोयल ने बताया कि आर्थराइटिस सिर्फ जोड़ों को ही नहीं वरन शरीर के विभिन्न अंगों जैसे माँसपेशी, चमड़ी, फेंफड़े, गुर्दे, ह्रदय, ग्रंथियों आदि को भी ग्रसित कर सकती है। इन रोगों के लक्षण गर्दन, कमर व अन्य जोड़ों में दर्द व जकड़न, धूप में चेहरा लाल होना, त्वचा कसना, ठण्ड में ऊँगली सफ़ेद या नीली होना, खून व प्लेटलेट की कमी, बार-बार गर्भपात होना, खून के थक्के जमना, अत्यधिक मुँह सूखना, आँखों में खुश्की, कनपेड़े सूजना, आँख लाल होना, जोड़ों में दर्द के साथ चर्म रोग, दस्त, शरीर पर लाल चकत्ते बनना आदि हैं। उपचार से लाभान्वित रोगी श्रीमती मीनाक्षी गर्ग ने बताया कि रह्यूमेटॉयड आर्थराइटिस का समय पर उपचार कराने से वे एक सामान्य जीवन जी पा रही हैं। उन्होंने गठिया रोगियों को जल्द डॉक्टरी सलाह लेने, निमयित दवा एवं परामर्श लेने के लिए प्रेरित किया। लाभान्वित रोगी मुकेश जानी ने बताया कि सोराइटिक गठिया का समय पर उपचार कराने से उन्हें बहुत फायदा हुआ है और पूर्णत: डॉक्टरी सलाह पर चलने के कारण उन्हें तकलीफ से निजात मिली है।

सर्वधर्म प्रार्थनासभा का आयोजन

राजसमन्द। गांधी सेवा सदन द्वारा सर्वधर्म प्रार्थनासभा का आयोजन हुआ। गांधी सेवा सदन के मंत्री डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा कि गांधीजी का जीवन एक प्रयोगशाला था। उन्होंने जीवन में सत्य, अहिंसा ब्रह्मचर्य, सत्याग्रह, प्रेम के जो प्रयोग किये वे ही उनके संदेश बन गये और गांधी वांग्मय की रचना हो गई। इस अवसर पर अखिल भारतीय इतिहास संकलन समिति द्वारा जीतमल कच्छारा, डॉ. राकेश तैलंग, डॉ. मोहनलाल श्रीमाली, श्यामप्रकाश देवपुरा, गीतादेवी रावत, नारायण उपाध्याय तथा डॉ. महावीरप्रसाद जैन को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रो. रोशनलाल महात्मा, छगन बोहरा, मधुसूदन व्यास एवं भगवत शर्मा भी उपस्थित थे।

मार्ग ईआरपी की डिजिटल पहल

उदयपुर। बिजनेस मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर बनाने वाली भारत की अग्रणी कम्पनी मार्ग ईआरपी राज्य के सूक्ष्म, लघु व मध्यम व्यापारियों के लिए सफलता, वृद्धि और व्यवसाय करने में आसानी प्रदान करने वाले एक भरोसेमंद प्रौद्योगिकी साझेदार के रूप में तेजी से उभर रहा है। कंपनी ने अगले तीन वर्षों में राज्य के 60 प्रतिशत से अधिक सूक्ष्म, लघु व मध्यम व्यापारियों को अपनी नवीनतम तकनीक व किफायती सॉफ्टवेयर से सही मायनों में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस प्रदान करने का लक्ष्य रखा है।

मार्ग ईआरपी के प्रबंध संचालक सुधीर सिंह ने कहा कि जुलाई 2017 में पूर्ण रूप से टैक्स स्ट्रक्चर बदलने पर व्यापारियों में बहुत भय एवं आशंका थी कि नए टैक्स को कैसे सीखेंगे, कैसे व्यापार करेंगे परन्तु मार्ग ईआरपी सॉफ्टवेयर के उपयोग से व्यापारियों को अपनी जीएसटी रिटर्न्स भरने एवं इ-वे बिल बनाने का आसान माध्यम मिल गया। देश के हर राज्य के छोटे तथा मध्यम व्यापारी वर्ग की दिक्कतों को पूरी तरह समझने के लिए हमने दिन रात एक कर दिए। राजस्थान में 500 चैनल पार्टनर्स ने हर छोटे बड़े जिले में व्यापारियो से बात की। अनुसन्धान और विकास टीम ने भविष्य की तकनीकों का इस्तेमाल करते सरल, सहज, सुलभ, किफायती सॉफ्टवेयर व समाधान बनाये।

एक्टर वही सफल होता है जो डू और डाई स्पिरिट रखता है : कृष्णा अभिषेक

- मशहूर कमेडियन कृष्णा अभिषेक से खास बातचीत -

उदयपुर। मशहूर कमेडियन कृष्णा अभिषेक हिस्ट्री टीवी-18 के पॉपुलर शो 'ओएमजी-ये मेरा इंडिया' के सीजन-6 की शूटिंग के सिलसिले में गत दिनों दो दिवसीय प्रवास पर उदयपुर आए। होटल शिव निवास में खास बातचीत में कृष्णा ने कहा कि एक्टिंग की दुनिया में नाम कमाने की चाहत रखने वाला वहीं स्ट्रगलर सफल होता है जिसमें डू और डाई की स्पिरिट होती है।

मेरी पहली फिल्म फ्लॉप हो गई। उसके बाद मैंने भोजपुरी, गुजराती सहित कई भाषाओं के सिनेमा में छोटे-मोटे रोल किए। लगातार काम करता गया तो सफलता भी पीछे-पीछे आती चली गई। यंगस्टर में मनोज वाजपयी और नवाजुद्दीन सिद्दिकी जैसी स्पिरिट होनी चाहिए कि सड़क पर सो लूंगा मगर मरूंगा तो मुंबई में ही। ओएमजी का छठा सीजन 18 नवम्बर को ऑन एयर होगा।

मशहूर एक्टर गोविंदा के भान्जे होने का कोई फायदा मिलता है या नहीं, सवाल पर कृष्णा ने कहा कि अगर मैं गोविंदा के भान्जे के तौर पर काम मांगता तो डेविड धवन से लॉन्च हो गया होता। उनके नाम का फायदा यह है कि जहां भी जाता हूं, इस परिचय पर चाय के साथ दो बिस्किट मिल जाते हैं मगर जब काम दिखाने की बारी आती है तब खुद का टैलेंट ही काम करता है। थोड़ा सा नुकसान कहूं तो यह है कि लोगों में थोड़ा सा लो परसेप्शन बन जाता है कि गोविंदा का भान्जा है, करेगा तो अच्छा ही। अभिषेक बच्चन को देखिये, उनके जैसा कोई एक्टर नहीं है। उनकी गुरू, दोस्ताना देखिये, क्या लजवाब काम किया है। मगर कई बार कंपेयर अमितजी से हो जाते हैं।

कृष्णा ने बताया कि जिस देश में गंगा रहता है की शूटिंग के दौरान मामा गोविंदा के साथ उदयपुर पहली बार आया था व उसके बाद से यह शहर मेरे दिल में बस गया। हर बार यहां से नई ऊर्जा लेकर जाता हूं। ओएमजी के छठे सीजन के बारे में बताया कि हमारी रिसर्च टीम बहुत मेहनत करती है। हर बार कुछ ऐसी नई स्टोरीज सामने आती है कि मैं खुद दांतों तले उंगलियां दबा लेता हूं।

सच कहूं तो रोमांचक कहानियों का पहला पाठक और श्रोता मैं ही होता हूं। इसके दस एपिसोड हैं जिसमें से चार कहानियां खासतौर पर उदयपुर की हैं। कृष्णा ने कहा कि आपको जानकर हैरानी होगी कि इस शो में हम एक विंटेज कार ड्राइवर को दिखाने जा रहे हैं जो 90 साल से गाड़ी चला रहा है। उनकी उम्र 105 साल से ऊपर है। ओएमजी का हर सीजन इतना हिट है कि यह 17 भाषाओं में डब होती है।

कपिल के शो और इस शो में अंतर यह है कि कपिल के शो में मैं इन दिनों सपना का किरदार कर रहा हूं। इसमें सपना की मसाज का लोगों का इंतजार रहता है। उसका डायलॉग एक करोड़ उधार दो..बहुत पॉपुलर है जबकि ओएमजी में अपना काम, अपनी स्टोरी, अपना एडवेंचर है।

कॉमेडी सर्कस शो तक को दस साल हो गए हैं। यह अब भी टीआरपी में नंबर वन है। ओएमजी शो में मैं माइसेल्फ हूं। यह मेरा शो है जहां पर लोग मेरे माध्यम से हिन्दुस्तान देखते हैं। मैं चाहता हूं कि कृष्णा की जो वास्तविक पर्सनेलिटी है वहीं लोग देखे।

-डॉ. तुक्तक भानावत

कान्यो-मान्यो

रांड छाप री कैवतां

बरखा री रितु मांय जदी हळकी-हळकी फुंवारां पड़ै तो केवै के माथा मांय जुंवां ज्यूं मईड़ो बरसर्‌यो है। कान्या नै कई आछा-आछा नै ठाला बैठ्यां मसखरी सूझै। कान्यो लै चंटी हाथ में टक-टक करतो मान्या पां जारै परो। मान्यो आंख मसलतां अठी-वठी नाळै तो कान्यो आव रै परो।

कान्यो बोल्यो, बेटी का बाप आज तो बरखा री रमाक-झमाक मांय मसखरी सूझी कै ढोल्या माथै आड़ो वै कैवतां याद करवा लाग्यो। घणखरी तो रांड छाप री माथै चड़ी जदी आंख मींच एक-एक उतरती री जाणै खाली चड़स कुवा मांय पाणी भरण उतरै। म्हूं एक-एक कैवत बोलूंगा। थूं ध्यान सूं सुणजै नै वींरो अरथावणो करजै। थारी ग्यान री परख भी वै जाई। जदी कान्यो ढूको जो सरू कीधी कैवत।

(1) एक रांड असी जा रात नै तो खाली रै ने दनै भरी रै (वलंगणी)

(2) एक रांड असी जा दनै तो दोड़ती फरै ने हांझै आय नै कोरै उबी रै (लाकड़ी)

(3) एक रांड रै आंत मांय दांत (काकड़ी)

(4) एक रांड असी जा आखाई खेत रा ढकल्या खा जा तोई नी धापै (चांवर-पटेला)

(5) एक रांड असी जा अनावना में जींतरा वखैर ऊभी (खजूर)

(6) एक रांड असी जा राजा रै मूंडा में पादै (केरी)

(7) एक रांड असी जा राजा नै ई रोवाड़ दै (मरच)

(8) एक रांड असी जा राजा भेळी जीमै (माखी)

(9) एक रांड असी जा राजा भेळा सोवै (जूं)

(10) एक रांड असी जा दनै तो कांकड़ मांय घूघरी वखैरती फरै ने हांझ की आय खूंटै उभी रै (बकरी)

मान्यो बोल्यो अबै ढबजा। थोड़ोक व्याम्बो लै। मनै मगज में बैठावा दै। कान्यो बोल्यो थूं काल तांई सोचबू कर। दस कैवतां मांय थनै कतरी रा अरथ आवै, थूं आपई सोचलै।

तुर्रा भजनी चैनराम

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' -

चित्तौड़गढ़ की तुर्रा-कलंगी ख्यालों की परम्परा में चैनराम गौड़ का नाम भुलाया नहीं जा सकता। मेवाड़ और मालवा के तुर्रा-कलंगी ख्यालों के लिए सैकड़ों लावणियां, गीत और गाथाओं को लिखने के कारण चैनराम का नाम विख्यात है।

करीब साठ वर्ष तक लगातार लिखने वाले पं. चैनराम की लेखनी ग्यारह वर्ष की उम्र से शुरू हुई। मेवाड़ी, हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी भाषाओं में उन्होंने हजारों भजनों की रचना की। इनमें अभी कम ही छपे हैं। अधिकांश भजन छपने बाकी हैं। वे चित्तौड़गढ़ स्थित खण्डेश्वर महादेव के पुजारी थे किन्तु अपनी रचनाओं में उन्होंने सभी धर्मों को आदर दिया। एक भजन में वे कहते हैं-

मोहम्मद कहूं या मोहन, तू अल्ला है तू ईश्वर है।
सारी सृष्टि का कर्त्ता, जगतपति तू जगदीश्वर है।
तू ही कृष्ण तू ही कादर, तू ही हनुमान हबीबुल्लाह।
तू ही गफ्फार गिरधारी, अली हजरत ही हर है।।

सरस्वती के इस साधक की शिव-भक्ति व शक्ति-भक्ति अटूट थी। उनके जीवन से जुड़े कई चमत्कार प्रसंग भी सुनने को मिलते हैं। चैनराम के अनुज मोहनलाल ने बताया कि उनका जन्म भी एक चमत्कार ही था। चित्तौड़गढ़ के तुर्रा-कलंगी अखाड़ा के उस्ताद मूलचन्द गौड़ की वे तेरहवीं सन्तान थे। उनसे पहले कोई बालक जीवित नहीं रहा। उनके जन्म के बाद ही परिवार में सुख-समृद्धि का संचार हुआ। उनसे मिलकर लोगों को चैन मिलता था। इस कारण चन्द्रशेखर से वह चैनराम के रूप में जाने-पहचाने लगे। वचन के पक्के और निश्छल हृदय के चैनराम अपने पिता मूलचन्द के निधन के बाद तुर्रा अखाड़ा के उस्ताद बने।

उन्होंने केवल लोगों को रिझाने के लिए ही नहीं, आत्मोद्धार के लिए भी प्रयत्न प्रारम्भ किया तथा योग और भक्ति मार्ग को अपनाया। अपने भजनों से प्रभु को प्रसन्न करना तथा उनसे आत्मोद्धार की याचना उनके साहित्य में सर्वत्र देखने को मिलती है। वे तुर्रा-कलंगी ख्यालों को भी शिव-पार्वती की लीला मानते तथा संवादों के बीच-बीच यह अर्थ प्रतिपादित करते थे। एक भजन में उन्होंने कहा-

रस भरा रसिक संगीत, प्यार की जीत
प्रीत की रीत पुरानी है।
सब सुनो प्रेम से दो भक्तों की
अमर कहानी है।।
ज्यों सीता के संग राम, राधे संग श्याम
रहे यह बात जुगादी है।।
हे नर नारी की जोड़
तुर्रा नर कलंगी मादी है।।
शिव-शक्ति के आधार, सकल संसार
रचा वही रीत रचानी है.....।

चैनराम पक्के सत्संगी तथा भजनानन्दी थे। घोसुण्डा, सावा, कन्नौज, भदेसर, मल्हारगढ़, आवरीमाता चितौड़गढ़, जावद तथा मन्दसौर आदि के कई लोगों ने उन्हें गुरुवई माना। कई लोगों के नाम भी उनके भजनों में मिलते हैं। उनके एक साथी गोपीलाल भाट ने बताया कि चित्तौड़गढ़ जिले के लोक प्रसिद्ध आवरी माता एवं झांतला माता के वहां नवरात्रि में मेला तथा जागरण जैसे आयोजनों को मौजूदा रूप देने में उनका बड़ा हाथ रहा।

मेवाड़ अंचल के शनि महाराज, सांवरियाजी, जोगणिया माता, ऊंटाला माता, लालबाई-फूलबाई, कालिका माता, भंवर माता, रूण्डेश्वर महादेव आदि की प्रशस्ति में चैनराम ने सैकड़ों भजन तथा कथाओं की रचना की जो आज भी लोकप्रिय हैं।

प्रसिद्धि की इच्छा से बहुत दूर रहने वाले चैनराम को चित्तौड़गढ़ का बच्चा-बच्चा भगतजी के नाम से पुकारता था। करीब 30 वर्ष की उम्र में ही चैनराम की पत्नी का देहावसान हो गया। इसके बाद उन्होंने अपना अधिकाधिक समय शिवार्चना में व्यतीत करने का निश्चय कर लिया। अपने रूण्डेश्वर महादेव के मन्दिर में रहकर उन्होंने अनेक भजन तथा छुटपुट छन्द रचना की। कई राग-रागिनियों तथा रसों में तुर्रा-कलंगी के सवाल-जवाब तथा देवी-देवताओं की कथाएं लिखीं। उनके लिखे चालीस से अधिक चोपड़े मोहनलाल गौड़ के पुत्र रविशंकर गौड़ के पास सुरक्षित हैं। उनमें से गोपीलाल भाट ने 'चैनराम चिंतामणी' के चार भाग तथा एक पुस्तिका 'तुर्रा कलंगी की शादी' प्रकाशित की है।

मृत्यु के चार माह पूर्व से वे बीमार रहने लगे। एक रात्रि को उन्होंने एक मिट्टी के कलश में पानी भरवाया तथा उस पर दीपक प्रज्वलित करवाया। घर वालों से उन्होंने कहा कि यह कलश फूट जाए तथा दीपक बूझ जाए तो समझना 'हंसा उड़ गया है।' वे यह कह निश्चिंत सो गए। परिजन रातभर चिन्तातुर होकर देखते रहे। तड़के एक झटके से अपनेआप कलश फूट गया तथा दीपक बूझ गया। देखा तो उनकी सांस रूक गई थी। यह दिन 29 दिसम्बर 1989 का था।

आज चैनराम हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनके द्वारा रचे गए भजन-साखियां अमर हैं। चित्तौड़गढ़ में रूण्डेश्वर महादेव मन्दिर में प्रतिवर्ष अक्षय नवमी पर अन्नकूट का आयोजन होता है। इस दिन दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं तथा उन्हें स्मरण करते हैं। उनकी साधना-समाधि को नमन करते हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।